॥ चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनाय नमः॥

विशद

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान

विधान मण्डल

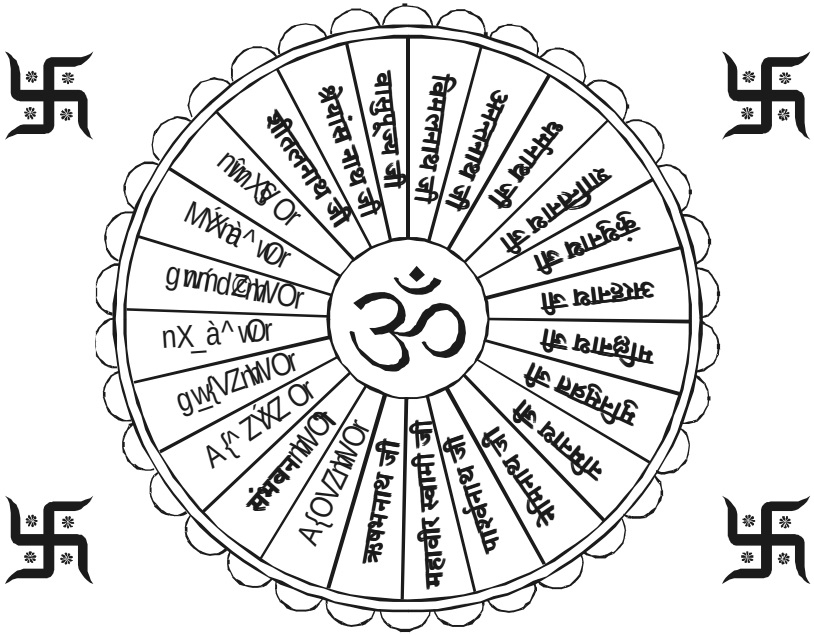

रचयिता :

प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति – चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान

कृतिकार – प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण – द्वितीय-2016 ● प्रतियाँ :1000

संकलन – मुनिश्री विशालसागरज महाराज,ऐलक विदक्षसागर महाराज
क्षु.विसोमसागर महाराज

सहयोग – आर्यिका भक्तिभारती माताजी, क्षु.वात्सल्यभारती माताजी

संपादन – ब्र.ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी
(9660996425), सपना दीदी (9829127533)

संयोजन – आरती दीदी

प्राप्ति स्थल – 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, रेडियो मार्केट जयपुर
मो.: 9414812008
2. श्री राजेशकुमार जैन अलवर मो.: 9414016566
3. पद्म जैन रेवाड़ी मो.: 09416882301
4. हरीश जैन गांधीनगर दिल्ली मो.: 9818115971
5. सुरेश जैन शांतिनगर जयपुर मो.:9812502062

मूल्य – 41/- रु. मात्र

–: पुण्यार्जक : –

स्व. श्री राजमलजी जैन महेन्द्रकुमार कासलीवाल

की पुण्य स्मृति में

श्रीमती गुणमाला देवी कासलीवाल, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर जयपुर

द्वारा दशलक्षण व्रत के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

मेरे उद्‌गार

भारतीय श्रमण परम्परा का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना सृष्टि का निर्माण। पंचम काल के अंत तक यह श्रमण परम्परा इसी प्रकार अक्षुण्ण बनी रहेगी। जिस दिन साधु का अभाव हो जायेगा उसी दिन से अग्नि, धर्म व राजा का अभाव हो जायेगा। वर्तमान में भूति ही दुर्गति से बचने का आधार है इस हेतु ***परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज*** *ने आज जहाँ भौतिकता की चकाचौंध में मानव पापों में डूबता जा रहा है वहीं हमारे लिए भक्ति का अवसर देकर पुण्यास्रव का अवसर प्रदान किया है। पूज्य आचार्य श्री ने ध्यान की गहराई में उतरकर हमारे लिए सुन्दर, सरस, सरल, अनमोल शब्दरूपी मोती की एक माला में पिरोकर चौबीस तीर्थंकर विधान के रूप में प्रदान किया है।*

पूज्य आचार्य श्री से मैं भी विगत दस वर्षों से जुड़ा हूँ मैंने पाया है इनका औदारिक तन साक्षात् शिवपथ का उपदेशक तथा इनकी चर्या मूलाचार का जीवन्त रूप है। आपकी वाणी में वह जादू है कि जैन अजैन सभी आपकी ओर खिंचे चले आते हैं। आपके सारगर्भित उपदेश जीवन की गहनतम समस्याओं को सहज ही हल कर देते हैं। आपके उपदेश सुनकर विधर्मी-साधर्मी, श्रावक से श्रमण, शैतान से इंसान व इंसान से भगवान बन जाते हैं। अंत में वीर प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि पूज्य आचार्यश्री को आरोग्य लाभ हो व वे इसी तरह युग-युग तक धर्म की अभूतपूर्व प्रभावना करते रहें।

पू. आचार्य श्री के चरणों में मन-वचन-काय पूर्वक कोटि-कोटि नमन्।

ब्र. ऋषभ कुमार शास्त्री 9422145549

(संघस्थ - आचार्य देवनन्दिजी महाराज)

अष्टान्हिका, दशलक्षण पर्व, तीर्थंकरो के पंचकल्याणक की तिथियों पर, सोलह कारण पर्व में अथवा भादवे में कृष्ण पक्ष की पंचमी से शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तक एक दिन में एक तीर्थंकर की पूजा इस तरह 24 दिनों में 24 तीर्थंकरों की पूजा कर उत्साहपूर्वक विधि-विधान से इस पूजन विधान का समापन करें। 24 तीर्थंकर के 24 व्रत किए जाते हैं उस दिन तीर्थंकर की पूजा एवं जाप करना चाहिए।

दिग्बंधन मंत्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। पूर्व दिशा में पुष्प छोड़ें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। दक्षिण दिशा में सभी इन्द्र पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। पश्चिम दिशा में सभी पुष्प या पीली सरसों क्षेपण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा। उत्तर दिशा में सभी लोग पीली सरसों या पुष्प क्षेपण करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।अब उर्ध्वलोक, अधोलोक, मध्यलोक में पीली सरसों क्षेपण करें।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु-कुरु झ्रं झ्रं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा। पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः स्वाहा।

अब अपनी अंजली में जल लेकर अपने सिर पर छोड़ें।

पूजन प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1 ।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि–पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि–पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।1 ।।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।2।।

अपराजित–मंत्रोऽयं सर्वविघ्न–विनाशनः।
मङ्गलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलम् मतः।।3।।

एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म–वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।

कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।6 ।।
विघ्नौघाः प्रलयम् यान्ति शाकिनी–भूतपन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।7 ।।

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

(यदि अवकाश हो तो यहां पर सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये नहीं तो नीचे लिखा श्लोक पढ़कर एक अर्घ चढ़ावें ।)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे ।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनसहस्रनाम अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवाणी का अर्घ

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि तत्वार्थसूत्रदशाध्याय अर्घं निर्व. स्वाहा ।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्री मज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसङ्घ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुङ्गवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृङ् मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलि क्षेपण करें)

नित्याप्रकम्पाद्भुत–केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ–धान्योपममेकबीजं संभिन्न–संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना–घ्राण–विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्भवंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।

प्रज्ञा–प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।

जङ्घावलि–श्रेणि –फलाम्बु–तंतु–प्रसून–बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण–स्वैर–विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो–वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व–वशित्वमैश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतिघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।7।।

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।8।।

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल–विड्जल्लमल्लौषधीशाः,स्वस्तिक्रियासुपरमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवास महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।10।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

(इति परम–ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुरसंघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्म चक्र भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र**

मारिं छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुख हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति मस्तु । ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाऽशेषकल्मशाय दिव्यतेजो मूर्तये नमः। श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपाप प्रणाशनाय सर्व विघ्न विनाशनाय सर्वरोग उपसर्ग विनाशनाय सर्वपरक्रत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वदेशस्य चतुर्विध संघस्य सर्व विश्वस्य तथैव मम्

(नाम) सर्वशांतिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।शांतिः निरन्तर तपो भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

अज्ञान महातम के कारण के,हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांतिधारा देते हैं।
संपूजकानां प्रति पालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।
अर्घ्य-शांति धारा करके हे प्रभू! ,अर्घ्य चढ़ाते मंगलकार।
विशद शांति को पाने हेतु वन्दन क रते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन पते शांतिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गंधोदक अपने माथे से लगाएँ।)

मानो जिन गिरि से गिरी, जलधारा हे नाथ!।
गंधोदक उत्तमांग उर, विशद लगाएँ माथ ।।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर!, थाल सजा कर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिन्धु के श्रीचरणों में अर्घ्य समर्पित करते हैं।।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें, गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूं श्री आचार्य विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज– सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश,सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा.....।। टेक।।
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।

जिनके चरणों में झुकता है जग सारा– जिन शीश...।।1।।
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गो में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा–जिन शीश...।।2।।
गिरि तरूवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिसमेंमानो।
ो अकृत्रिम हैं ना निर्मित किसी के द्वारा–जिन शीश।।3।।
जिन शीश के धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिस भक्ती बिन यह है संसार असारा–जिन
श ी श . . . । । 4 । ।
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता
ह ै ।
जो रोगादिक से दिलवान छुटकारा–जिन शीश...।।5।।
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा–जिन शीश...।।6।।
जिना मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा–जिन शीश...।।7।।
जो पावन दीप जलाते हैं, अरू भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा–जिन शीश...।।8।।

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्।।
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।

सुर–नर–किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।
करके तव पद अर्चना, विघन रोग हों नाश।
जन–जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभो!, करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।

सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।
अथ अर्हत् पूजा प्रतिज्ञायां----।। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

यहां पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।

श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभु जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाऊँ, सिद्ध शरण में मैं जाऊँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाऊँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यभ्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।

पंच महा कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
पंच महा परमेष्ठी की मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय–सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
मंगलमय शुभ सहस नाम की, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
सरस्वती जिनवाणी की मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टि, पुरूषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।
जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए विशद होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।

केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान।।2।।
विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ति द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।
परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादिक का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादिक की, करता हूँ पूजन अर्चन।।4।।
हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादि द्रव्यों का शुभ, पाया मैंने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करूँ हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतल नाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।

श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश ।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश ।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश ।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान् ।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान ।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी ।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी ।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांञ्जलिं क्षिपेण करना चाहिये ।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान् ।
शुभ संश्रोतृ पादानुसारिणी, चउ विधि बुद्धि ऋद्धीवान ।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी ।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी ।।2 ।।
श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन ।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन ।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी ।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी ।।3 ।।
प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी ।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी ।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी ।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी ।।4 ।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तु हों पुष्प महान।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।5।।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।6।।
जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।7।।
दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।8।।
आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टि विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधि मल्लौषधि जान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।9।।
क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।

ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्)(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री देवशास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

देवशास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के अरु, सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।।
हे करुणाकर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु समूह कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय समूह श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकर समूह श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

ताटंक छंद

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू ,जिन चैत्य चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! शरण में आयें हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू , जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
हम अक्षत लाए श्री चरणों में,प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू ,जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू ,जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट कभी न कर पाये।

चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू ,जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभो !, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू ,जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू ,जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि. स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभू , वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभू ,जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

(छन्द तोटक)

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं,श्री जिनवर छियालिस मूलगुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।
है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।

जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।।3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समिती शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।
जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनको यश मंगल गावत हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर श्री सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-**तीन लोक तिहूँ काल के, नमू सर्व अरहंत।**
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकालवर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन् , अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु! अन्तर तम साफ करो,हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभो! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मैटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नी में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्तानंद छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूज्यकर ,पाऊँ मुक्ति धाम।।
विशद भाव से कर रहे ,शत शत बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास ,अजर अमर पद को लहें पुष्पांजलि क्षिपेत्

24 तीर्थंकर स्तवन

दोहा– तीर्थंकर चौबीस का, करते हम गुणगान।
जिनकी अर्चा कर मिले, हमको शिव सोपान।।

(चौपाई)

जय–जय तीर्थंकर पदधारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।
वृषभादि चौबिस जिन गाए, अनुपम केवलज्ञान जगाए।।
समवशरण आ देव रचाए, दिव्य ध्वनि सुनकर हर्षाए।
कर्म नाश कर मुक्ति पाए, शिवपुर में साम्राज्य बनाए।।
मोक्ष कल्याणक देव मनाए, चरण चिन्ह शुभ इन्द्र बनाए।
इन्द्र सभी भक्ति को आए, विशद भाव से शीष झुकाए।।
मुनी साथ कई मुक्ति पाए, मोक्ष महल के स्वामी गाए।
अतिशय किए इन्द्र ने भारी, भक्ति कीन्ही विस्मयकारी।।
नर नारी जिनके गुण गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते।
वंदन कर सौभाग्य जगाते, श्री जिनेन्द्र को शीश झुकाते।।
अर्घ्य बोलते मंगलकारी, स्तुति गाते हैं मनहारी।
श्रावक दौड़े–दौड़े जाते, प्रभु की जय–जयकार लगाते।।
गाते हैं कई भजनावलियाँ, खिलती हैं अंतर की कलियाँ।
भव्य जीव सौभाग्य जगाते, तीर्थंकर का दर्शन पाते।।

हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार वंदन को जाएँ।
विघ्न दूर हो जावें सारे, भक्ति के हों भाव हमारे।।
भक्ति करके पुण्य कमाएँ, तीर्थंकर पदवी को पाएँ।
अंतिम यही भावना भाते, तीर्थंकर पद शीश झुकाते।।
जय-जय तीर्थंकर अवतारी, ग्रह बाधा मिट जाए सारी।
मम् जीवन हो मंगलकारी, यही भावना रही हमारी।।

(पुष्पाजंलिं क्षिपेत्)

श्री चौबीस तीर्थंकर समुच्चय पूजन

(स्थापना)

वर्तमान की भरत क्षेत्र में, चौबीसी है सर्व महान्।
वृषभादिक महावीर प्रभु का, करते भाव सहित गुणगान।।
भक्ति भाव से नमस्कार कर, विनय सहित करते पूजन।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो मम्, करते हैं हम आह्वानन्।।
जिस पथ पर चलकर के भगवन्, तुमने स्व पद पाया है।
उस पथ पर बढ़ने का पावन, हमने लक्ष्य बनाया है।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट्सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छंद)

पाप कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुख पाते हैं।
पाकर जन्म मरण भव-भव में, तीन लोक भटकाते हैं।।
जन्म जरा के नाश हेतु प्रभु, निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

पुण्य कर्म के प्रबल योग से, जग का वैभव पाते हैं।
भोग पूर्ण न होने से हम, मन में बहु अकुलाते हैं।।
नाश हेतु संसार वास के, सुरभित गंध चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है जीव तत्व अक्षय अखण्ड हम उसे जान न पाते हैं।

फँसकर मिथ्यात्व कषायों में, हम चतुर्गती भटकाते हैं।।
अक्षय अखण्ड पद पाने को, हम अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भिन्न तत्त्व हमसे अजीव, वह जग में भ्रमण कराते हैं।
सहयोगी बनकर विषयों में, वह लालच दे बहलाते हैं।।
हो कामवासना नाश प्रभु, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव के कारण से प्राणी, इस जग में नाच नचाते हैं।
जो क्षुधा व्याधि से हो व्याकुल,मन में अतिशय अकुलाते हैं।।
हम क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, चरणों नैवेद्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम बंध तत्त्व ने, आतम में बंधन डाला।
सहस्र रश्मिवत् पूर्ण प्रकाशित, चेतन को कीन्हा काला।।
बंध तत्त्व के नाश हेतु हम, घृत का दीप जलाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समिति व्रताभाव में, संवर कभी न कर पाए।
कर्मों ने भटकाया जग में, उनसे छूट नहीं पाए।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, सुरभित धूप जलाते है।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा न कर पाए, सम्यक् तप से हीन रहे।
जग भोगों के फल पाने में, हमने अगणित कष्ट सहे।।
मोक्ष महाफल पाने को हम, श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के फल हैं निष्फल, उसमें हम भरमाए हैं।
आस्रव बंध के कारण हमने, जग के बहु दुख पाए हैं।।
पद अनर्घ को पाने हेतु, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम भरत क्षेत्र की चौबीसी को, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जल चंदन अक्षत सुमन, चरु ले दीप प्रजाल।
फल पाने अतिशय विशद, गाते हम जयमाल।।

(ताटंक छंद)

ऋषभ चिन्ह लख वृषभनाथ पद, 'विशद' भाव से करूँ नमन्।
गज लक्षण है अजितनाथ का, उनके चरणों नित वंदन।।
अश्व चिन्ह संभव जिनवर का, नृप जितारि के प्रभु नंदन।
मर्कट चिन्ह चरण अंकित है, अभिनंदन को शत् वंदन।।

सुमति जिनेश्वर के पद चकवा, जिन का करते अभिवंदन।
पद्म चिन्ह है पद्मप्रभू पद, लेकर पद्म करूँ अर्चन।।
स्वस्तिक चिन्ह सुपार्श्वनाथ का, दर्शन कर नित करूँ भजन।
चन्द्र चिन्ह चंदा प्रभ वंदौ, करूँ निजातम का दर्शन।।
मगर चिन्ह श्री सुविधि नाथ पद, पुष्पदंत उपनाम शुभम्।
कल्पवृक्ष शीतल जिन स्वामी, मुद्रा जिनकी शांत परम।।
गेंडा चिन्ह चरण में लख के, श्रेयांस नाथ को करूँ नमन्।
भैंसा चिन्ह श्री वासुपूज्य पद, देख करूँ शत्-शत् वंदन।।
विमलनाथ का चिन्ह है सूकर, विमल रहे मेरे भगवन्।
सेही चिन्ह है अनंतनाथ पद, उनको सादर करूँ नमन्।।
वज्र चिन्ह प्रभु धर्मनाथ पद, नमन करूँ हो धर्म गमन।
शांतिनाथ का हिरण चिन्ह शुभ, शांति दो मेरे भगवन्।।
कुंथुनाथ अज चरण देखकर, पाऊँ मैं सम्यक् दर्शन।
अरहनाथ का चिन्ह मीन है, वीतराग जिन को वन्दन।।
कलश चिन्ह लख मल्लिनाथ को, बंदू पाऊँ ज्ञान सघन।
कछुवा चिन्ह मुनिसुव्रत जिन का, वन्दन कर हो जाऊँ मगन।।
चरण पखारूँ नमिनाथ के, लखकर नीलकमल लक्षण।
शंख चिन्ह पद नेमिनाथ के, इन्द्रिय का जो किए दमन।।
चिन्ह सर्प का पार्श्वनाथ पद, लखकर करूँ चरण वंदन।
वर्धमान पद सिंह देखकर, करूँ चरण का अभिनंदन।।
वृषभादिक महावीर प्रभु की, करूँ नित्य सविनय पूजन।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु के, चरणों में शत्-शत् वंदन।।
दोहा - चौबीसों जिनराज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांती कर विशद, शिव का पावें योग।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा - चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।

मंगल करें सदैव, सुख शांती आनन्द हो ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

विधान प्रारंभ

तीर्थंकर चौबीस की, अर्चा मंगलकार ।
पुष्पाञ्जलिं कर पूजते, होय आत्म उद्धार ।।

।। मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री आदिनाथ जिन पूजन-1

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ महाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं ।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति

स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतू, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति

स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नी में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्री फल अर्पित करता हूँ प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, ''विशद'' गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करते हैं प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

नाभिराय मरूदेवि के नन्दन, वृषभनाथ प्रभु जगत महान्।
नगर अयोध्या जन्म लिये हैं, अष्टापद गिरि से निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज मैं विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देवस्य जन्म स्थान जनकजननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच सहस योजन ऊँचाई, बारह योजन गोलाकार।
तप्त स्वर्ण सम समवशरण में, आदिनाथ शोभें मनहार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आयू लाख चौरासी पूरव, की है प्रभु छियालिस गुणवान।
धनुष पाँचसौ है ऊँचाई, ऋषभ चिन्ह पाए भगवान।।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भक्तों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित ह , करते श्री जिन का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति

स्वाहा।

ऋषभ नाथ के समवशरण में, 'वृषभसेन' गणधर स्वामी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हुए मोक्ष के अनुगामी।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः श्री वृषभनामस्य 'वृषभसेनादि' चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव जञ्जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु कहूँ जयमाल।।

(राधे श्याम छन्द)

सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर जिनको ध्याते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।
जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख शांती को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।
तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।

ले दीक्षा चार सहस्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाईं।
तब खाने पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाईं।।
जब चर्या को निकले भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।
राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधू चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छूरस का दान दिया।।
विधी दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनि चर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतिया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।
प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।
देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्वपर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध कर, सब कर्मों का नाश किया।
फिर माघ कृष्ण चौदस को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।

हे दीनानाथ ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ति पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष फल दान करो।।

(आर्या छन्द)

हे आदिनाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाऊँ मैं शिवधाम।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अजितनाथ पूजन-2

(स्थापना)

हे अजितनाथ! तव चरण माथ,सब झुका रहे जग के प्राणी।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, प्रभु भवि जीवों के कल्याणी।।
मम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, हे करुणानिधि करुणाकारी।
तव चरणों में वन्दन करते, हे मोक्ष महल के अधिकारी।।
हे नाथ ! कृपा करके मेरे, अन्तर में आन समा जाओ।
तुम राह दिखाओ मुक्ती की, हे करुणाकर उर में आओ।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट्

सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

सागर का जल पीकर भी हम, तृषा शांत न कर पाए।
जन्मादि जरा के रोग मैटने, प्रासुक जल भरकर लाए।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ,मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन के वन में रहकर भी, ताप शांत न कर पाए।
संताप नशाने भव-भव का, शुभ गंध चढ़ाने हम लाए।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ,मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अक्षय पद पाने हेतू, हम सदा तरसते आए हैं।
अब अक्षय पद पाने को भगवन्, अक्षय अक्षत लाए हैं।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ,मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे ! भगवन् मुक्ति वधु को पाने का।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

व्याकुल होकर कामवासना, से हम बहु अकुलाए हैं।
अब काम बाण के नाश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ,मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के सब जीव रहे व्याकुल, जो क्षुधा से बहु अकुलाए हैं।
हो क्षुधा वेदना नाश प्रभो !, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह महा, उसके सब जीव सताए हैं।
हम मोह तिमिर के नाश हेतु, यह अतिशय दीपक लाए हैं।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के तीव्र सघन वन से, यह धूप जलाने लाए हैं।
हो अष्ट कर्म का शीघ्र नाश, हम साता पाने आए हैं।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की चाहत में सदियों से, सारे जग में हम भटकाए ।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, अतएव चढ़ाने फल लाए।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष हमें हे भगवन् ! मुक्ति वधु को पाने का।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदिक अष्ट द्रव्य, हम श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।
हो पद अनर्घ शुभ प्राप्त हमें, हम चरण शरण में आए हैं।।
श्री अजित नाथ जी साथ निभाओ, मोक्ष महल में जाने का।
दो आशीष ''विशद'' हे भगवन् ! मुक्ति वधू को पाने का।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ माह की तिथी अमावस, अजितनाथ लीन्हें अवतार।
धन्य हुई विजया माताश्री, गृह में हुए मंगलाचार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

माघ सुदी दशमी को जन्मे, जिनवर अजितनाथ तीर्थेश।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यांजन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दशमी शुभ माघ सुदी पावन, अजितेश तपस्या धारी है।
इस जग का मोह हटाया है, यह संयम की बलिहारी है।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि.

स्वाहा।

(चौपाई)

पौष शुक्ल एकादशी आई, केवलज्ञान जगाए भाई।
तीर्थंकर अजितेश कहाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिसपद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुदि चैत्र पञ्चमी जानो, सम्मेद शिखर से मानो।
अजितेश जिनेश्वर भाई, शुभ घड़ी में मुक्ती पाई।।
प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाते, शुभभाव से महिमा गाते।
हम मोक्ष कल्याणक पाएँ, बस यही भावना भाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मात विजयसेना जितशत्रू, के सुत अजितनाथ भगवान।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत् विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं अजितनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अजित नाथ का समवशरण है साढ़े ग्यारह योजन मान।

तप्त स्वर्ण सम शोभित होते, जिसमें तीर्थंकर भगवान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं अजितनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अस्सी लाख वर्ष की आयू, अजितनाथ जी पाए महान।
ऊँचाई है धनुष चार सौ, अरु पचास, छियालिस गुणवान।।
दिव्य देशना देकर श्रीजिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्यं चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं अजितनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नब्बे गणधर अजितनाथ के, 'सिंहसेन' जी रहे प्रधान।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, का हम करते हैं सम्मान।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम: श्री अजितनाथस्य 'सिंहसेनादि' नवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन पूजा के भाव से, कटे कर्म का जाल।
अजित नाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(छन्द मोतियादाम)

जय लोक हितंकर देव जिनेन्द्र, सुरासुर पूजे इन्द्र नरेन्द्र।
करें अर्चन कर जोर महेन्द्र, करें पद वन्दन देव शतेन्द्र।।

प्रभु हैं जग में सर्वमहान, करूँ मैं भाव सहित गुणगान।
गर्भ के पूरव से छह मास, बने सुर इन्द्र प्रभु के दास।।
करें रत्नों की वृष्टि अपार, करें पद वन्दन बारम्बार।
मनाते गर्भ कल्याणक आन, करें नित भाव सहित गुणगान।।
प्रभू का होवे जन्म कल्याण, करें पूजा तब देव महान।
ऐरावत लावें इन्द्र प्रधान, करें गुणगान सुरासुर आन।।
करें अभिषेक सभी मिल देव, सुमेरू गिरि के ऊपर एव।
बढ़े जग में आनन्द अपार, रही महिमा कुछ अपरम्पार।।
रहे जग में बन के नर नाथ, झुकाते चरणों में सब माथ।
मिले जब प्रभु को कोई निमित्त, लगे तब संयम में शुभ चित्त।।
गिरि कन्दर शिखरों पर घोर, सुतप धारें अति भाव विभोर।
जगे फिर प्रभु को केवलज्ञान, करें सुर नर पद में गुणगान।।
करें उपदेश प्रभु जी महान, करें सुन के प्राणी कल्याण।
करें प्रभु जी फिर कर्म विनाश, प्रभू करते शिवपुर में वास।।
बने अविकार अखण्ड विशुद्ध, अजरामर होते पूर्ण प्रबुद्ध।
जगी मन में मेरे यह चाह, मिले हमको प्रभु सम्यक् राह।।

(छन्द घत्तानंद)

जय-जय उपकारी, संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
सद्गुण के धारी, जिन अविकारी, सर्व दोष के परिहारी।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – अजितनाथ से नाथ का, कौन करे गुणगान।
चरण वन्दना कर मिले, उभय लोक सम्मान।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री संभवनाथ पूजन-3

(स्थापना)

विशद भाव से पूजा करने, जिन मंदिर में आते हैं।
सम्भव जिन की पूजा करके, जीवन सफल बनाते हैं।।
जिनपद का आराधन करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
आह्वानन करके निज उर में, सादर शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ कृपाकर भक्तों को, मुक्ति का मार्ग दिखा जाओ।
हम भव सागर में डूब रहे, अब पार कराने को आओ।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरी छन्द)

प्रासुक जल के कलश भराए, चरण चढ़ाने को हम लाए।
जन्म जरा मृत्यू भयकारी, नाश होय प्रभु शीघ्र हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केसर घिसकर लाए, चरण शरण में हम भी आए।
विशद भावना हम यह भाए, भव संताप नाश हो जाए।।

प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर अक्षत थाल भराए, जिन अर्चा को हम ले आए।
हम भी अक्षय पद पा जाएँ, चतुर्गती में न भटकाएँ।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चावल रंग कर पुष्प बनाए, हमको जरा नहीं वह भाए।
यहाँ चढ़ाने को हम लाए, काम वासना मम नश जाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्रस यह नैवेद्य बनाए, बार-बार खाके पछताए।
क्षुधा शांत न हुई हमारी, नाश करो तुम हे ! त्रिपुरारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप जलाए, यहाँ आरती करने लाए।
छाया मोह महातम भारी, उससे मुक्ति होय हमारी।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध करते हम आए, भव-भव में कई दु:ख उठाए।
धूप जलाने को हम लाए, कर्म नाश करने हम आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय हमने न पाया, तीन लोक में भ्रमण कराया।
सरस चढ़ाने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म विशद है मंगलकारी, हम भी उसके हैं अधिकारी।
पद अनर्घ पाने को आए, अर्घ्य चढ़ाने को हम लाए।।
प्रभु हो तीन लोक के त्राता, भवि जीवों को ज्ञान प्रदाता।
तीर्थंकर पदवी के धारी, सम्भव जिन पद ढोक हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सम्भव जिन अवतार लिये।
मात सुसेना के उर आए, जग-जन का उपकार किये।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को प्रभु, जन्मे सम्भव जिन तीर्थेश।
न्हनव और पूजन करवाये, इन्द्र सभी मिलकर अवशेष।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगसिर सुदी पूर्णमासी को, संभव जिन वैराग्य लिए।
निज स्वजन और परिजन सारे, वैभव से नाता तोड़ दिए।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

चौथ कृष्ण कार्तिक की जानो, संभवनाथ जिनेश्वर मानो।
केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।

भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सुदी चैत्र की आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
संभव जिनवर मुक्ती पाए, हम चरणों शीश झुकाए।।
प्रभु चरणों हम अर्घ्य चढ़ाते, शुभभावों से महिमा गाते।
हम भी मोक्ष कल्याणक पाएँ, अन्तिम यही भावना भाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

पिता जितारि मात सुसेना, के सुत सम्भव नाथ कहे।
श्रावस्ती में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद से मोक्ष गहे।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारह योजन समवशरण है, सम्भव नाथ का विस्मयकार।
तप्त स्वर्ण सम रंग प्रभू का, परमौदारिक है अविकार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस परश्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलाकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आयु लाख साठ पूरव की, सम्भव नाथ की रही महान।
ऊँचाई है धनुष चार सौ, छियालिस गुण धारी भगवान।।

दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ दैवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणधर पञ्च एक सौ जानो, श्री सम्भव जिनवर के साथ।
'चारूदत्त' गणधर मुनिवर कई, के पद झुका रहे हम माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री संभवनाथस्य 'चारूदत्तादि' पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **सम्भव नाथ जिनेन्द्र के, चरणों में चितधार।**
जयमाला गाते विशद, पाने भव से पार।।

(छन्द चामर)

पूर्व पुण्य का सुफल, जिनेन्द्र देव धारते।
तीर्थंकर श्रेष्ठ पद, आप जो सम्हालते।।
पुष्प वृष्टि देव आन, करते हैं भाव से।
जन्म समय इन्द्र सभी, न्हवन करें चाव से।।
चिन्ह देख इन्द्र पग, नाम जो उच्चारते।
जय जय की ध्वनि तब, इन्द्र गण पुकारते।।
क्षुद्र सा निमित्त पाय, संयम प्रभु धारते।
चेतन का चिन्तन शुभ, चित्त से विचारते।।
विश्व वन्दनीय जो, पाप शेष नाशते।

ॐकार रूप दिव्य देशना प्रकाशते ।।
श्री जिनेन्द्र ज्ञान ज्ञेय, सर्व लोक जानते ।
द्रव्य तत्त्व पुण्य पाप, धर्म को वखानते ।।
सर्व दोष भागते हैं, दूर-दूर आपसे ।
सर्व दुःख दूर हों, आप नाम जाप से ।।
आप सर्व लोक में, अनाथ के भी नाथ हो ।
ध्यान करे आपका उन सबके तुम साथ हो ।।
इन्द्र और नरेन्द्र और गणेन्द्र आपको भजैं ।
सर्वलोक वर्ति जीव, चरण आपके जजैं ।।
आपके चरणारविन्द में, करूँ ये प्रार्थना ।
तीन काल आपकी, प्राप्त हो आराधना ।।
हे जिनेन्द्र ध्यान दो, ज्ञान दो वरदान दो ।
कर रहे हम प्रार्थना, प्रार्थना पे ध्यान दो ।।
लोक यह अनन्त है, अनन्त का न अन्त है ।
जीव ज्ञानवन्त है, शक्ति से भगवन्त है ।।
ज्ञान का प्रकाश हो, मोह तिमिर नाश हो ।
स्वस्वरूप प्राप्त हो, स्वयं में निवास हो ।।
धर्म शुक्ल ध्यान हो, आत्मा का भान हो ।
सर्व कर्म हान हो, स्वयं की पहचान हो ।।
घातिया हों कर्म नाश, होय ज्ञान का प्रकाश ।
अष्ट गुण प्राप्त कर, शिवपुर में होय वास ।।
भावना है यह जिनेश, और नहीं कोई शेष ।
धर्म जैन है विशेष, सब अधर्म हैं अशेष ।।

(छन्द घत्तानन्द)

सम्भव जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्ष मार्ग के पथगामी।
शिवपुर के वासी, ज्ञान प्रकाशी,त्रिभुवन पति हे जगनामी!।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पुष्प समर्पित कर रहे, जिनवर के पदमूल।
मोक्ष महल की राह में, साधक जो अनुकूल।।

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

श्री अभिनन्दन नाथ पूजन–4

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधु के स्वामी।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा है मनभावन।
भाव सहित हम करते वन्दन, करते हैं उर में आह्वानन।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय हो अन्तर्यामी।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अष्टक)

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

क्षीर नीर के कलश मनोहर, भरकर के हम लाए हैं।
जन्म मरण के नाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं।
भव की तृषा मिटाने वाली, अर्चा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।1।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

कश्मीरी केसर में चन्दन, हमने श्रेष्ठ घिसाया है।
जिसकी परम सुगन्धी द्वारा, मन मधुकर हर्षाया है।
भव आताप नशाने वाली, अर्चा है, भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।2।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

कर्म बन्ध के कारण प्राणी, जग के सब दुख पाते हैं।
जन्म जरा मृत्यू को पाकर, भव सागर भटकाते हैं।
अक्षय पद देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।3।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्
काम वासना में सदियों से, तीन लोक भटकाए हैं।
पुष्प सुगन्धित लेकर चरणों, मुक्ती पाने आए हैं।
श्री जिनेन्द्र की पूजा पावन, आतम के कल्याण की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।4।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्
क्षुधा रोग की बाधाओं से, जग में बहुत सताए हैं।
नाश हेतु हम बाधाओं के, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
क्षुधा नाश करने वाली है, पूजा श्री भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।5।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

मोह तिमिर में फँसकर हमने, जीवन कई बिताए हैं।
मोह महातम नाश होय मम्, दीप जलाने लाए हैं।
मम अन्तर में होय प्रकाशित, ज्योती सम्यक् ज्ञान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।6।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

इन्द्रिय के विषयों में फँसकर, निजानन्द सुख छोड़ दिया।
आत्मध्यान करने से हमने, अपने मुख को मोड़ लिया।
अष्ट कर्म की नाशक होती, अर्चा जिन भगवान की।।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।7।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।

वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

कर्म शुभाशुभ जो भी करते, उसके फल को पाते हैं।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, आतम ज्ञान जगाते हैं।

मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।8।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवल ज्ञान की।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्
लोकालोक अनादी शाश्वत, पर द्रव्यों से युक्त कहा।
सप्त तात्व अरु पुण्य पाप की, श्रद्धा के बिन बना रहा।
पद अनर्घ देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम् – वन्दे जिनवरम्

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।9।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार।
माँ सिद्धार्था के उर श्री जिन, अभिनंदन लीन्हें अवतार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ शुक्ल द्वादशी को जग में, अतिशय हुआ था मंगलगान।
जन्म लिए अभिनन्दन स्वामी, इन्द्र किए तब प्रभु गुणगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनंदन संयम धारे।
ले चले पालकी में नर-सुर, वह सब बोले जय-जयकारे।।
हम वन्दन करते चरणों में, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चौपाई)

चौदस सुदी पौष की आई, अभिनंदन तीर्थंकर भाई।
पावन केवलज्ञान जगाए, सुर-नर वंदन करने आए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो।
अभिनंदन जिन मुक्ती पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाए।

अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनदंननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

अभिनन्दन जिन माँ सिद्धार्था, संवर नृप के पुत्र महान।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े दश योजन अभिनन्दन, समवशरण पाए शुभकार।
तप्त स्वर्ण की आभा वाले, बन्दर चिन्ह रहा मनहार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं।

आयू पचास लाख पूरब की, अभिनन्दन जी पाए हैं।
धनुष तीन सौ अरू पचास के, ऊँचे जिन कहलाए हैं।।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन दैवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.

स्वाहा।

अभिनन्दन जिनवर के गणधर, 'वज्रादिक' हैं एक सौ तीन।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, कहे गये हैं ज्ञान प्रवीण।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अभिनन्दन नाथस्य 'वज्रादि' त्र्याधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – अभिनन्दन वन्दन करूँ, भाव सहित नतभाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय अभिनन्दन त्रिपुरारी, जय-जय हो मंगलकारी।
तुम जग के संकटहारी, जय-जय जिनेश अविकारी।।
प्रभु अष्टकर्म विनसाए, अष्टम वसुधा को पाए।
तव चरण शरण को पाएँ, भव बन्धन से बच जाएँ।।
हमने भव-भव दुख पाए, अब उनसे हम घबड़ाए।
तुम भव बाधा के नाशी, हो केवल ज्ञान प्रकाशी।।
तव गुण का पार नहीं है, तुम सम न कोई कहीं है।
भव-भव में शरणा पाई, पर आप शरण न भाई।।
यह थे दुर्भाग्य हमारे, जो तुम सम तारणहारे।
मन में मेरे न भाए, अतएव जगत भरमाए।।
अब जागे भाग्य हमारे, जो आए द्वार तुम्हारे।

तव श्रेष्ठ गुणों को गाएँ, न छोड़ कहीं अब जाएँ।।
अर्चा कर ध्यान लगाएँ, तुमको निज हृदय सजाएँ।
तव चरणों में रम जाएँ, जब तक न मुक्ती पाएँ।।
है विनती यही हमारी, हे त्रिभुवन के अधिकारी।
बश यही भावना भाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।।
भक्तों पर करुणा कीजे, अब और सजा न दीजे।
हम सेवक बन कर आए, अपनी यह अर्ज सुनाए।।
कई जीव प्रभू तुम तारे, भव सागर पार उतारे।
हे त्रिभुवन के सुख दाता, हे जिनवर ! भाग्य विधाता।।
हे मोक्ष महल के स्वामी ! त्रिभुवन के अन्तर्यामी।
तुमने शिव पद को पाया, यह रही धर्म की माया।।

छन्द घत्तानन्द

हे जिन ! अभिनन्दन, पद में वन्दन, करने हम द्वारे आये।
मैटो भव क्रन्दन, पाप निकन्दन, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करूँ, अभिनन्दन जिन देव।
पुष्पाञ्जलि करके ''विशद'', पूजें तुम्हें सदैव।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

श्री सुमतिनाथ पूजन-5

(स्थापना)

सुर नर किन्नर से अर्चित हैं, तीर्थंकर के चरण कमल।
शरणागत की रक्षा करते, बनकर रक्षा मंत्र धवल।।
सुमतिनाथ पद माथ झुकाकर, उर में करते आह्वानन।
विशद भाव से शीश झुकाकर, करते हम शत्-शत् वन्दन।।
मम उर में तिष्ठो हे भगवन् ! हमको सुमति प्रदान करो।
संयम समता मय जीवन हो, हे प्रभु ! समता का दान करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छंद)

मोक्ष मार्ग के अनुपम नेता, करते हैं जग का कल्याण।
तीन लोक में मंगलकारी, जिनका गाते सब यशगान।

प्रासुक निर्मल जल के द्वारा, करते हम उनका अर्चन।
जन्म जरा के नाश हेतु हम, भाव सहित करते वन्दन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व में सर्वद्रव्य के, ज्ञाता श्री जिन देव कहे।
विशद विनय के साथ चरण में, वन्दन करते भक्त रहे।
परम सुगन्धित चन्दन द्वारा, करते हम प्रभु का अर्चन।
भव संताप नाश करने को, भाव सहित करते वन्दन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषी मुनी गणधर विद्याधर, का जो करते आराधन।
मुक्ती पाने हेतू करते, मूलगुणों का जो पालन।
ललित मनोहर अक्षय अक्षत, से करते प्रभु का अर्चन।
अक्षय पद को पाने हेतु, भाव सहित करते वन्दन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से पार लगाने, हेतू अनुपम पोत कहे।
विशद मोक्ष के पथ पर जिनने, अथक काम के बाण सहे।।
वकुल कमल कुन्दादि पुष्प से, करते हम उनका अर्चन।
काम बाण विध्वंश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ध्यान और चिन्तन से, मिटती भव की पीड़ाएँ।

भूत प्रेत नर पशु शांत हो, करते मनहर क्रीड़ाएँ।।
बावर फैनी मोदक आदिक, से जिनका करते अर्चन।
क्षुधा वेदना नाश होय मम, करते हम शत्-शत वन्दन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद ज्ञान उद्योतित करते, मोह तिमिर हरने वाले।
मोक्ष मार्ग के राही चरणों, गुण गाते हो मतवाले।।
घृत के दीप जलाकर करते, जिनवर के पद में अर्चन।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मोही होकर के प्रभु ने, मोह पास का नाश किया।
काल अनादी से कर्मों का, बन्धन पूर्ण विनाश किया।।
अगर तगर की धूप बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की श्रेष्ठ साधना, कर उत्तम फल पाया है।
चतुर्गति का भ्रमण त्यागकर, शिवपुर धाम बनाया है।।
श्री फल, केला, लौंग, इलायची, से करते प्रभु का अर्चन।
मोक्ष महाफल प्राप्त हमें हो, करते हम शत्-शत् वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध शिला पर वास हेतु प्रभु, अष्ट कर्म का नाश किए।
क्षायिक ज्ञान प्रकट कर अनुपम, पद अनर्घ में वास किए।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करता मैं सम्यक् अर्चन।
पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु हम, करते हैं शत्-शत् वन्दन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

द्वितिया शुक्ल माह श्रावण की, मात मंगला उर आए।
सुमतिनाथ की भक्ती में रत, देव सभी मंगल गाए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि को प्रभु, जन्में सुमतिनाथ भगवान।
जय जयगान हुआ धरती पर, इन्द्र किए अभिषेक महान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नौमी पावन, श्री सुमतिनाथ दीक्षाधारी।
श्री शिवसुख देने वाली है शुभ, सर्व जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

(चौपाई)

चैत शुक्ल एकादशी जानो, सुमतिनाथ तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभू जी पाये, समवशरण सुर नाथ रचाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी एकादशि आई, गिरि सम्मेद शिखर से भाई।
सुमतिनाथ जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिवपद के धारी।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मेघराज नृप मात मंगला, के उर जन्मे सुमति जिनेश।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, तीर्थराज निर्वाण विशेष।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश योजन का समवशरण है, सुमति नाथ का श्रेष्ठ महान।
तप्त स्वर्ण सम अतिशय सुन्दर, प्रभु हैं सर्व गुणों की खान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है मंगलकार।

जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं।

चालिस लाख पूर्व की आयू, सुमति नाथ की रही विशेष।
धनुष तीन सौ है ऊँचाई, केवलज्ञानी रहे जिनेश।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ दैवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तौटक' आदिक एक सौ सोलह, सुमतिनाथ के रहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुखहर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ध्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री सुमतिनाथस्य 'तौटक' षोडशाधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मती सुमति करके प्रभू , हो गये आप निहाल।
सुमतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(सखी छन्द)

जय सुमतिनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तुम हो मुक्ती पथगामी, तुम सर्व लोक में स्वामी।।
प्रभु हो प्रबोध के दाता, जग में जन-जन के त्राता।
तुम सम्यक् ज्ञान प्रदाता, इस जग में आप विधाता।।
है समवशरण सुखकारी, भविजन को आनन्द कारी।

शुभ देवों की बलिहारी, करते हैं अतिशय भारी।।
वह प्रतिहार्य प्रगटाते, भक्ती कर मोद मनाते।
परिवार सहित सब आते, अर्चा करके हर्षाते।।
सुनते जिनवर की वाणी, जो जन-जन की कल्याणी।
प्रभु वीतराग विज्ञानी, आनन्द सुधामृत दानी।।
तुमरी महिमा हम गाते, प्रभु सादर शीश झुकाते।
हम चरण-शरण में आते, आशीष आपका पाते।।
जब से तव दर्शन पाया, प्रभु जी श्रद्धान जगाया।
फिर भेद ज्ञान को पाया, हमने यह लक्ष्य बनाया।।
हम भी सौभाग्य जगाएँ, प्रभु मोक्ष मार्ग अपनाएँ।
तव चरणों शीश झुकाएँ, रत्नत्रय निधि पा जाएँ।।
बनके सम्यक् तपधारी, हो जावें हम अविकारी।
हम बने प्रभू अनगारी, है विशद भावना भारी।।
प्रभु कर्म निर्जरा होवे, अघ कर्म हमारे खोवे।
मम आतम भी शुचि होवे, सब कर्म कालिमा धोवे।।
प्रभु अनन्त चतुष्ट पावें, तव केवल ज्ञान जगावें।
फिर शिवपुर को हम जावें,अरु मुक्ति वधु को पावें।।
हम यही भावना भाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।
हम भाव सहित गुण गाते, प्रभु द्वार आपके आते।।

(छन्द घत्तानन्द)

तुम हो हितकारी, सब दुखहारी,सुमतिनाथ जिनअविकारी।
हे समताधारी ! ज्ञान पुजारी, मोक्ष महल के अधिकारी।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - सर्व कर्म को नाशकर, बने मोक्ष के ईश।
'विशद' ज्ञान पाने प्रभू, चरण झुकाऊँ शीश।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पदमप्रभु पूजन–6

(स्थापना)

हे त्याग मूर्ति करुणा निधान ! हे धर्म दिवाकर तीर्थंकर !
हे ज्ञान सुधाकर तेज पुंज ! सन्मार्ग दिवाकर करुणाकर।।
हे परमब्रह्म ! हे पद्मप्रभ ! हे भूप ! श्रीधर के नन्दन।
ग्रह रवि अरिष्ट नाशक जिन का, हम करते उर में आह्वानन्।।
हे नाथ ! हमारे अंतर में, आकर के धीर बँधा जाओ।
हम भूले भटके भक्तों को, प्रभुवर सन्मार्ग दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र !अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ताटंक छन्द)

निर्मल जल को प्रासुक करके, अनुपम सुन्दर कलश भराय।
जन्मादिक के दुख मैटन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर! भव दुख हर्ता,चरण पूजते मन वच काय ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का चन्दन शीतल, कंचन झारी में भर ल्याय।
भव आताप मिटावन कारण, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक जल से धोकर तन्दुल, परम सुगन्धित थाल भराय।
अक्षय पद को पाने हेतू , श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सुरभित और मनोहर, भांति भांति के पुष्प मँगाय।
कामबाण विध्वंश करन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत से पूरित परम सुगन्धित, शुद्ध सरस नैवेद्य बनाय।
क्षुधा नाश का भाव बनाकर, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित ले दीप मालिका, घृत कपूर की ज्योति जलाय।
मोह तिमिर के नाशन हेतू , श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दस प्रकार के द्रव्य सुगंधित, सर्व मिलाकर धूप बनाय।
अष्टकर्म चउगति नाशन को, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।

रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐला केला और सुपारी, आम अनार श्री फल लाय।
पाने हेतू मोक्ष महाफल, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर सुगंध सुअक्षत, पुष्प चरू ले दीप जलाय।
धूप और फल अष्ट द्रव्य ले, श्री जिनवर के चरण चढ़ाय।।
रवि अरिष्ट ग्रह की शांती को, पद्मप्रभ पद शीश झुकाय।
हे करुणाकर ! भव दुख हर्ता, चरण पूजते मन वच काय।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

माघ कृष्ण की षष्ठी तिथि को, पद्मप्रभु अवतार लिए।
मात सुसीमा के उर आए, जग में मंगलकार किए।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, पृथ्वी पर नव सुमन खिला।
भूले भटके नर-नारी को, शुभम् एक आधार मिला।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करके भाग्य जगाते हैं।

मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयोदशी कार्तिक वदि पावन, जग से नाता तोड़ चले।
पद्मप्रभू स्वजन परिजन धन, सबकी आशा छोड़ चले।।
हम भाव सहित वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पूनम चैत्र शुक्ल की आई, पद्मप्रभु तीर्थंकर भाई।
सारे कर्म घातिया नाशे, क्षण में केवलज्ञान प्रकाशे।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।
पद्मप्रभु जी मोक्ष सिधाए, कर्म नाशकर मुक्ती पाए।।
हम भी मुक्तिवधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाए।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मात सुसीमा धारण नृप के, पद्म प्रभु जी पुत्र महान।

कौशाम्बी में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े नौ योजन का जानो, पद्म प्रभु का समवशरण।
लाल कमल सम तन शोभित है, मैटा प्रभु ने जन्म मरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजें, दर्शन देते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.स्वाहा।

तीस लाख पूरब की आयू , पद्म प्रभु की रही महान।
धनुष ढाई सौ की ऊँचाई, लाल कमल प्रभु की पहचान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वज्रचमर' आदिक दश इक सौ, पद्मप्रभु के हुए गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।4।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम:

श्री पद्मनाथस्य 'वज्रचमरादि' दशधिकशतं गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पद्मप्रभ के चरण में, होती पूरण आस।
कल्मश होंगे दूर सब, है पूरा विश्वास।।
तीन योग से प्रभू पद, वन्दन करूँ त्रिकाल।
पूजा करके भाव से, गाता हूँ जयमाल।।

(छन्द तामरस)

जय पद्मनाथ पद माथ नमस्ते, जोड़-जोड़ द्वय हाथ नमस्ते।
ज्ञान ध्यान विज्ञान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
भव भय नाशक देव नमस्ते, सुर-नर कृत पद सेव नमस्ते।
पद्मप्रभ भगवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।।
आतम ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते।
पद झुकते शत इन्द्र नमस्ते, ज्ञान पयोदधि चन्द्र नमस्ते।।
भवि नयनों के नूर नमस्ते, धर्म सुधारस पूर नमस्ते।
धर्म धुरन्धर धीर नमस्ते, जय-जय गुण गम्भीर नमस्ते।।
भव्य पयोदधि तार नमस्ते, जन-जन के आधार नमस्ते।
रागद्वेष मद हनन नमस्ते, गगनाङ्गण में गमन नमस्ते।।
जय अम्बुज कृत पाद नमस्ते, भरत क्षेत्र उपपाद नमस्ते।

मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, कामजयी महावीर नमस्ते ।।
विघ्न विनाशक देव नमस्ते, देव करें पद सेव नमस्ते ।
सिद्ध शिला के कंत नमस्ते, तीर्थंकर भगवन्त नमस्ते ।।
वाणी सर्व हिताय नमस्ते, ज्ञाता गुण पर्याय नमस्ते ।
वीतराग अविकार नमस्ते, मंगलमय सुखकार नमस्ते ।।

(छंद घत्तानन्द)

जय जय हितकारी, करुणाधारी, जग उपकारी जगत् विभू।
जय नित्य निरंजन, भव भय भंजन, पाप निकन्दन पद्मप्रभू।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – पद्म प्रभ के चरण में, झुका भाव से माथ।
रोग शोक भय दूर हों, कृपा करो हे नाथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन–7

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो!, आये खाली हाथ।।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभू स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हम जन्म जन्म के प्यासे हैं, जल से निज प्यास बुझाई है।
मम प्यास शांत न हो पाई, अतएव शरण तव पाई है।।
न जन्म मरण होवे फिर-फिर, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व,यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, चन्दन से शीतलता पाई।
आताप शांत न हुआ प्रभो!, अत एव शरण हमने पाई।।
हो भव आताप का नाश प्रभो!, हम यही भावना भाते हैं।
अवएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन गंध चढ़ाते हैं ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।

भव-भव में पद की लालच से, अपना पुरुषार्थ गंवाया है।
पर अक्षय शुभ अविनाशी पद, न हमें कभी मिल पाया है।।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह अक्षत धवल चढ़ाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम अग्नि की ज्वाला में, सदियों से जलते आये हैं।
न काम वासना शांत हुई, हमने कई जन्म गंवाएँ हैं।।
हो काम बाण विध्वंस प्रभो!, हम यही भावना भाते हैं।

अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन हमने दिन रात किया, न क्षुधा शांत हो पाई है।
पुद्गल ने पुद्गल को जोड़ा, न चेतन की सुधि आई है।।
हो क्षुधा रोग का नाश प्रभो!, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, ताजा नैवेद्य चढ़ाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह जाल में अटक रहे, न मुक्ति उससे मिल पाई।
इस तन के साज सम्हालों में, न आतम की निधि खिल पाई।।
हो मोह अंध का नाश प्रभो!, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन दीप जलाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बन्धन से अब तक, स्वाधीन नहीं हो पाए हैं।
हमने संसार सरोवर में, फिर-फिर कर गोते खाए हैं।।
हो अष्ट कर्म का नाश प्रभो!, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह मनहर धूप जलाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल न पाया, फल और सभी हमने पाए।
हम सर्व लोक में भटक लिए, अब नाथ शरण में हम आए ।।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।

अतएव चरण में जिन सुपार्श्व,हम फल यह विविध चढ़ातेहैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सुखों की चाहत में, मन मेरा बहु ललचाया है।
हम भ्रमर बने भटके दर-दर, पर पद अनर्घ न पाया है।।
अब प्राप्त हमें हो पद अनर्घ, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व,यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ कीन्हें उपकार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठ्यांगर्भकल्याणकप्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणकप्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थेश।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी।
जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद गिरि से, पाए मुनी कई साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभू की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभू पद में चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

कौशाम्बी में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, श्री सुपार्श्व जिन पुत्र महान।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ योजन का समवशरण है, जिन सुपार्श्व का गोलाकार।
मरकत मणि सम आभा प्रभु की,स्वस्तिक चिन्ह रहा सुखकार।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यः जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बीस लाख पूरव की आयू, जिन सुपार्श्व की रही महान।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, तन की छियालिस हैं गुणवान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पञ्च ऊन इक शतक गणी थे, श्री सुपार्श्व जिनवर के साथ।
'बलदत्तादी' अन्य मुनीश्वर, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ध्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झौं झौं नम: श्री सुपार्श्वनाथस्य 'बलदत्तादि' पंचनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन सुपार्श्व की अब यहाँ, गाने को जयमाल।
भक्त चरण में आए हैं, मिलकर बालाबाल।।

(काव्य छन्द)

श्री सुपार्श्व जिनराज, सर्व दुखों के हर्ता।
भक्तों के सरताज, सौख्य समृद्धी कर्त्ता।।
भव रोगों से तृप्त, जीव के हैं प्रभु त्राता।
जिन अनाथ के नाथ, जगत को देते साता।।
नृप प्रतिष्ठ के लाल, पृथ्वी देवी माता।
नगर बनारस जन्म, लिए जिन भाग्य विधाता।।
षष्ठी भादव शुक्ल, गर्भ में आये स्वामी।
अन्तिम पाये गर्भ, मोक्ष के हो अनुगामी।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जन्म श्री जिन देवा।

करते सह परिवार, इन्द्र जिनवर की सेवा।।
स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र, ऐरावत लाया।
पाण्डुक शिला पे जाके, प्रभु का न्हवन कराया।।
स्वस्तिक देखा चिन्ह, इन्द्र ने दांये पग में।
जिन सुपार्श्व का जयकारा, गूंजा इस जग में।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जिनवर संयम धारे।
केशों का लुन्चन करके, प्रभु वस्त्र उतारे।।
छठी कृष्ण फल्गुन को, घाती कर्म नशाए।
अक्षय अनुपम अविनाशी, प्रभु ज्ञान जगाए।।
सातें कृष्ण फाल्गुन को, प्रभु जी मोक्ष सिधाए।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, मुक्ती पाए।।
हे सुपार्श्व ! तव चरणों में, हम शीश झुकाते।
'विशद' मोक्ष हो प्राप्त हमें, हम तव गुण गाते।।
दोहा – पार्श्वमणी सम हैं प्रभू, जिन सुपार्श्व है नाम।
हमको भी निज सम करो, शत्–शत् बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

जिन सुपार्श्व हमको मुक्तिवर दीजिए, भव बाधा मेरी जिनवर हर लीजिए।
चरण कमल में करते हैं हम अर्चना, तीन योग से पद में करते वन्दना।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री चन्द्रप्रभु पूजन–8

(स्थापना)

हे चन्द्रप्रभो ! हे चन्द्रानन ! महिमा महान् मंगलकारी।
तुम चिदानन्द आनन्द कंद, दुख द्वन्द फंद संकटहारी।।
हे वीतराग ! जिनराज परम ! हे परमेश्वर ! जग के त्राता।
हे मोक्ष महल के अधिनायक ! हे स्वर्ग मोक्ष सुख के दाता।।
मेरे मन के इस मंदिर में, हे नाथ ! कृपा कर आ जाओ।
आह्वानन् करता हूँ प्रभुवर, मुझको सद् राह दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

भव सिन्धु में भटका फिरा, अब पार पाने के लिए।
क्षीरोदधी का जल ले आया, मैं चढ़ाने के लिए।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने चतुर्गति में भ्रमण कर, दुःख अति ही पाए हैं।
हम चउ गती से छूट जाएँ, गंध सुरभित लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके जगत् में कर्म के वश, दु:ख से अकुलाए हैं।
अब धाम अक्षय प्राप्ति हेतू, धवल अक्षत लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग से उद्विग्न हो, कई दु:ख हमने पाए हैं।
अब छूटने को भव दुखों से, पुष्प चरणों लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की इच्छाएँ मिटी न, व्यंजन अनेकों खाए हैं।
अब क्षुधा व्याधी नाश हेतू, सरस व्यंजन लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यात्व अरु अज्ञान से, हम जगत में भ्रमाए हैं।
अब ज्ञान ज्योती उर जले, शुभ रत्न दीप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय महामोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति

स्वाहा।

अघ कर्म के आतंक से, भयभीत हो घबराए हैं।
वसु कर्म के आघात हेतू, अग्नी में धूप जलाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक सभी फल खाए लेकिन, मोक्ष फल न पाए हैं।
अब मोक्षफल की भावना से, चरण श्री फल लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य वसु ले, अर्घ्य शुभम् बनाए हैं।
शाश्वत सुखों की प्राप्ति हेतू, थाल भरकर लाए हैं।।
श्री चन्द्रप्रभु के चरण की, शुभ वंदना से हो चमन।
मैं सिर झुकाकर विशद पद में, कर रहा शत् शत् नमन्।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

सोलह स्वप्न देखती माता, हर्षित होती भाव विभोर।
रत्न वृष्टि करते हैं सुरगण, सौ योजन में चारों ओर।।
चैत वदी पंचम तिथि प्यारी, गर्भ में प्रभुजी आये थे।
चन्द्रपुरी नगरी को सुन्दर, आकर देव सजाए थे।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशि पावन, महासेन नृप के दरबार।

जन्म हुआ था चन्द्रप्रभु का, होने लगी थी जय-जयकार।।
बालक को सौधर्म इन्द्र ने, ऐरावत पर बैठाया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, मन मयूर तब हर्षाया।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राज्य त्याग वैराग्य लिया।
पञ्च मुष्ठि से केश लुञ्च कर, महाव्रतों को ग्रहण किया।।
आत्मध्यान में लीन हुए प्रभु, निज में तन्मय रहते थे।
उपसर्ग परीषह बाधाओं को, शांतभाव से सहते थे।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी सप्तमी के दिन, कर्म घातिया नाश किए।
निज आतम में रमण किया अरु, केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
अर्ध अधिक वसु योजन परिमित, समवशरण था मंगलकार।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल करते, चन्द्रप्रभु की जय-जयकार।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ललितकूट सम्मेदशिखर पर, फाल्गुन शुक्ल सप्तमी वार।
वसुकर्मों का नाश किया अरु, नर जीवन का पाया सार।।
निर्वाण महोत्सव किया इन्द्र ने, देवों ने बोला जयकार।
चन्द्रप्रभु ने चन्द्र समुज्ज्वल सिद्धशिला पर किया बिहार।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

जन्म बनारस नगरी पाए, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
चन्द्र प्रभु जी चन्द्रपुरी में, महासेन नृप के दरबार।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े आठ योजन का भाई, चन्द्र प्रभू का समवशरण।
उदित चाँद सम कान्ति प्रभु की, सुर नर वन्दन करें चरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयू शुभ दश लाख पूर्व की, चन्द्र प्रभु जी पाए हैं।
धनुष ड़ेढ़ सौ के ऊँचे प्रभु, चिन्ह चाँद प्रगटाए हैं।।
दिव्य देशना देकर करते श्री जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन अधिक नब्बे गणधर थे, चन्द्र प्रभू के साथ महान।
'दत्तादिक' कई अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं गुणगान।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः श्री चंद्रप्रभस्य 'दत्तादि' त्रिनवति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चन्द्रप्रभु के चरण में, करता हूँ नत भाल।
गुणमणि माला हेतु मैं, कहता हूँ जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

ऋषि मुनि यतिगण सुरगण मिलकर, जिनका ध्यान लगाते हैं।
वह सर्व सिद्धियों को पाकर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो ध्यान प्रभू का करते हैं, दुख उनके पास न आते हैं।
जो चरण शरण में रहते हैं, उनके संकट कट जाते हैं।।
अघ कर्म अनादी से मिलकर, भव वन में भ्रमण कराते हैं।
जो चरण शरण प्रभु की पाते, वह उनके पास न आते हैं।।
अध्यात्म आत्मबल का गौरव, उनका स्वमेव वृद्धी पाता।
श्रद्धान ज्ञान आचरण सुतप, आराधन में मन रम जाता।।
तुमने सब बैर विरोधों में, समता का ही रस पान किया।
उस समता रस को पाने हेतू, मैंने प्रभु का गुणगान किया।।
तुम हो जग में सच्चे स्वामी, सबको समान कर लेते हो।
तुम हो त्रिकालदर्शी भगवन्, सबको निहाल कर देते हो।।
तुमने भी तीर्थ प्रवर्तन कर, तीर्थंकर पद को पाया है।
तुम हो महान् अतिशयकारी, तुममें विज्ञान समाया है।।
तुम गुण अनन्त के धारी हो, चिन्मूरत हो जग के स्वामी।
तुम शरणागत को शरणरूप, अन्तर ज्ञाता अन्तर्यामी।।

तुम दूर विकारी भावों से, न राग द्वेष से नाता है।
जो शरण आपकी आ जाए, मन में विकार न लाता है।।
सूरज की किरणों को पाकर ज्यों, फूल स्वयं खिल जाते हैं।
फूलों की खूशबू को पाने, मधुकर मधु पाने आते हैं।।
हे चन्द्रप्रभु ! तुम चंदन हो, जग को शीतल कर देते हो।
चन्दन तो रहा अचेतन जड़, तुम पर की जड़ता हर लेते हो।।
सुनते हैं चन्द्र के दर्शन से, रात्रि में कुमुदनी खिल जाती।
पर चन्द्र प्रभु के दर्शन से, चित् चेतन की निधि मिल जाती।।
तुम सर्व शांति के धारी हो, मेरी विनती स्वीकार करो।
जैसे तुम भव से पार हुए, मुझको भी भव से पार करो।।
जो शरण आपकी आता है, मन वांछित फल को पाता है।
ज्यों दानवीर के द्वारे से, कोइ खाली हाथ न आता है।।
जिसने भी आपका ध्यान किया, बहुमूल्य सम्पदा पाई है।
भगवान आपके भक्तों में, सुख साता आन समाई है।।
जो भाव सहित पूजा करते, पूजा उनको फल देती है।
पूजा की पुण्य निधि आकर, संकट सारे हर लेती है।।
जिस पथ को तुमने पाया है, वह पथ शिवपुर को जाता है।
उस पथ का जो अनुगामी है, वह परम मोक्ष पद पाता है।।
यह अनुपम और अलौकिक है, इसका कोई उपमान नहीं।
वह जीव अलौकिक शुद्ध रहे, जग में कोई और समान नहीं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन चन्दा, पाप निकन्दा, आनन्द कन्दा सुखकारी।
जय करुणाधारी, जग हितकारी, मंगलकारी अवतारी।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – शिवमग के राही परम, शिव नगरी के नाथ।
शिवसुख को पाने विशद, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पुष्पदन्त पूजन-9

(स्थापना)

सुर नर किन्नर विद्याधर भी, पुष्पदंत को ध्याते हैं।
महिमा जिनकी जग में अनुपम, उनके गुण को गाते हैं।।
पुष्पदंत हैं कन्त मोक्ष के, जिनके चरणों में वंदन।
'विशद' भाव से करते हैं हम, श्री जिनवर का आह्वानन्।।
हे जिनेन्द्र ! करुणा करके, मेरे अन्तर में आ जाओ।
हे पुष्पदंत ! हे कृपावन्त !, प्रभु हमको दर्श दिखा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौवोला छन्द)

कर्मोदय के कारण हमने, विषयों का व्यापार किया।
मिथ्या और कषायों के वश, हेय तत्त्व से प्यार किया।।
जन्म जरादिक नाश हेतु हम, चरणों नीर चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदन्त को, विशद भाव से ध्याते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों की चंचलता द्वारा, कर्मों का आस्रव होता।

अशुभ कर्म के कारण प्राणी, जग में खाता है गोता।।
भव आतप के नाश हेतु हम, चंदन चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषय रहे क्षणभंगुर, बिजली सम अस्थिर रहते।
पुण्य के फल से मिल पाते हैं, पापी कई इक दुःख सहते।।
पद अखंड अक्षय पाने को, अक्षत चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील विनय जप तप व्रत संयम, प्राप्त नहीं कर पाया है।
मोह महामद में फँसकर के, जीवन व्यर्थ गँवाया है।।
काम बाण के नाश हेतु हम, चरणों पुष्प चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों की मृग तृष्णा में ही, सारे जग में भ्रमण किया।
विषयों की ज्वाला में जलकर, जन्म लिया अरु मरण किया।।
क्षुधा व्याधि के नाश हेतु हम, व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु सप्त तत्त्व में, जिसको भी श्रद्धान नहीं।
भवसागर में रहे भटकता, उसका हो निर्वाण नहीं।।
मोह तिमिर के नाश हेतु हम, मणिमय दीप जलाते हैं।

परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म का फल है दुष्फल, निष्फल जो पुरुषार्थ करे।
अष्ट गुणों को हरने वाले, प्राणी का परमार्थ हरे।।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, अनुपम धूप जलाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कर्मों के फल से जग के, सारे फल हमने पाए।
मोक्ष महाफल नहीं मिला यह, फल खाकर के पछताए।।
मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु हम, श्रीफल चरण चढ़ाते हैं।
परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल जल सम शुद्ध हृदय, चंदन सम मनहर शीतलता।
अक्षत सम अक्षय भाव रहे, है सुमन समान सुकोमलता।।
हैं मिष्ठ वचन मोदक जैसे, दीपक सम ज्ञान प्रकाश रहा।
यश धूप समान सुविकसित कर, फल श्रीफल जैसे सुफलअहा।।
अपने मन के शुभ भावों का, यह चरणों अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हम परम पूज्य जिन पुष्पदंत को, विशद भाव से ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की नौमी, काकंदीपुर में भगवान।
पुष्पदंत अवतार लिए हैं, रमा मात के उर में आन।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला प्रतिपदा को, जन्में पुष्पदंत भगवान।
नृप सुग्रीव रमा माता के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन माह शुक्ल की एकम्, दीक्षा धारे जिन तीर्थेश।
पुष्पदंतजी हुए विरागी, राग रहा न मन में लेश।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

कार्तिक शुक्ल दोज पहिचानो, पुष्पदंत तीर्थंकर मानो।
केवलज्ञान प्रभु प्रगटाए, समवशरण तब इन्द्र बनाए।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

अष्टमी शुभ भाद्रपद शुक्ला, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
पुष्पदंत जिन मोक्ष पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।

हम कर रहे पूजा प्रभू की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

काकन्दीपुर जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।
नृप सुग्रीव रमा माता के, सुत हैं पुष्पदन्त भगवान।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ योजन का समवशरण है, पुष्प दन्त जिन का मनहार।
कुन्द पुष्प सम देह सुसुन्दर, मगर चिन्ह पग में शुभकार।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयू शुभ दो लाख पूर्व की, पुष्पदन्त पाए भगवान।
हाथ चार सौ है ऊँचाई, प्रभु जी हैं छियालिस गुणवान।।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंतनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आठ अधिक अस्सी गणधर शुभ, पुष्पदन्त के साथ रहे।
'श्री नंगादिक' अन्य मुनीश्वर, श्रेष्ठ प्रभू के भक्त कहे।।

दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः श्री पुष्पदंतस्य 'नंगादि' अष्टाशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – मुक्ति वधू के कंत तुम, पुष्पदंत भगवान।
गुण गाऊँ जयमाल कर, पाऊँ मोक्ष निधान।।

(पद्धडि छन्द)

जय-जय जिनवर श्री पुष्पदंत, तुम मुक्ति वधु के हुए कंत।
जय शीश झुकाते चरण संत, जय भवसागर का किए अंत।।
जय फाल्गुन वदि नौमी सुजान, सुरपति कीन्हे प्रभु गर्भ कल्याण।
जय मगसिर वदि एकम् सुकाल, जय जन्म लिया प्रभु प्रातःकाल।।
जय जन्म महोत्सव इन्द्र देव, खुश होकर करते हैं सदैव।
जय ऐरावत सौधर्म लाय, जय मेरू गिरि अभिषेक कराय।।
जय वज्रवृषभ नाराच देह, जय सहस आठ लक्षण सुगेह।
प्रभु दीर्घकाल तक राज कीन, मगसिर सित एकम् सुपथ लीन।।
जय पुष्पक वन पहुँचे सुजाय, प्रभु सालिवृक्ष ढिग ध्यान पाय।
जय कर्म घातिया किए नाश, निज आतम शक्ती कर प्रकाश।।
जय कार्तिक सुदि द्वितिया महान्, प्रभु पाये केवलज्ञान भान।
जय-जय भविजन उपदेश पाय, प्रभु के चरणों में शीश नाय।।
प्रभु दीजे जग को ज्ञानदान, पाते कई प्राणी दृढ़ श्रद्धान।
कई ज्ञान सहित चारित्रधार, करुणाकर जग जन जलधिसार।
जय भादों सुदि आठें प्रसिद्ध, प्रभु कर्म नाश कर हुए सिद्ध।।

जय–जय जगदीश्वर जगत् ईश, तव चरणों में नत नराधीश।
जय द्रव्यभाव नो कर्म नाश, जय सिद्ध शिला पर किए वास।।
जय ज्ञान मात्र ज्ञायक स्वरूप, तुम हो अनंत चैतन्य रूप।
निर्द्वन्द्व निराकुल निराधार, निर्मल निष्फल प्रभु निराकार।।
दोहा – आलोकित प्रभु लोक में, तव परमात्म प्रकाश।
आनंदामृत पानकर, मिटे आस की प्यास।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सोरठा – पुष्पदंत भगवान, ज्ञान सुमन प्रभु दीजिए।

पुष्पांजलि अर्पित विशद, नाथ क्लेशहर लीजिए।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शीतलनाथ पूजन-10

(स्थापना)

शीतलनाथ अनाथों के हैं, स्वामी अनुपम अविकारी।
शांति प्रदायक सब सुखकर्त्ता, ग्रह अरिष्ट पीड़ाहारी।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा अनुपम, करे कर्म का पूर्ण शमन।
भाव सहित हम करते प्रभु का, हृदय कमल में आह्वानन्।।
यह भक्त खड़े हैं आश लिए, उनकी विनती स्वीकार करो।
तुम हृदय कमल पर आ तिष्ठो, वश इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - सोलहकारण की)

चरण चढ़ाऊ निर्मल नीर, त्रयधारा देकर गंभीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
जन्मादिक का रोग नशाय, कर्म नाश मुक्ती पद पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसकर के चन्दन गोशीर, मैटे जो भव-भव की पीर।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

प्राणी का भवताप नशाय, अतिशयकारी सौख्य दिलाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अमल अखण्ड महान, पद पाए हम हे भगवान!
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
सुरभित अक्षत धोकर लाय, प्रभु चरणों में दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित ले मनहार, रंग बिरंगे विविध प्रकार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
काम बाण का रोग नशाय, चेतन की शक्ती खिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के ताजे ले पकवान, चढ़ा रहे करके गुणगान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
क्षुधा रोग मेरा नश जाय, तव चरणों की भक्ती पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर का होय विनाश, पाएँ सम्यक् ज्ञान प्रकाश।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।

रत्नमयी शुभ दीप जलाय, प्रभु के चरणों दिए चढ़ाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट गंध युत धूप महान, करने अष्ट कर्म की हान।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
अष्ट कर्म को पूर्ण नशाय, सिद्ध शिला हमको मिल जाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला आम अनार, भांति-भांति के ले मनहार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
श्री जिनेन्द्र के चरण चढ़ाय, मोक्ष सुफल पाने को भाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले मंगलकार, अर्घ्य चढ़ाएँ अपरम्पार।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।
पद अनर्घ हमको मिल जाय, रत्नत्रय पा मुक्ति पाय।
परम सुखकार, प्रभु पद वन्दन बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

चैत वदी आठें शीतल जिन, मात सुनंदा उर धारे।

रत्नवृष्टि करके इन्द्रों ने, बोले प्रभु के जयकारे।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

माघ वदी द्वादशी सुहावन, भद्दलपुर में शीतलनाथ।
मात सुनंदा के गृह जन्मे, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण द्वादशी सुहावन, जिनवर श्री शीतल स्वामी।
जैन दिगम्बर दीक्षा धारे, बने मोक्ष के अनुगामी।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

पौष कृष्ण की चौदश आई, शीतलनाथ जिनेश्वर भाई।
बने उसी दिन केवलज्ञानी, ज्ञान सुधामृत के वरदानी।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

अश्विन शुक्ला अष्टमी, जिन श्री शीतलनाथ जी।
मोक्ष गिरि सम्मेद से, पाए कई मुनि साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभू की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभू पद में चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

मात सुनन्दा दृढ़रथ के सुत, शीतल नाथ जिनेन्द्र कहे।
भद्दलपुर में जन्में प्रभुजी, तीर्थराज से मोक्ष गहे ।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाये नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े सात योजन का अनुपम, शीतल जिन का समवशरण।
तप्त स्वर्ण सम आभा वाले, नाशे जग का जन्म मरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.।

एक लाख पूरव की आयू, पाए शीतल नाथ जिनेश।
नब्बे धनुष रही ऊँचाई, कल्पवृक्ष पग चिन्ह विशेष।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.

स्वाहा।

एक अधिक अस्सी गणधर शुभ, शीतलनाथ के हुए महान।
'अनगारादी' अन्य मुनीश्वर, का हम करते हैं सम्मान।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य 'अनगारादि' एकाशीतिः गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीन लोक में पूज्य हैं, शीतल नाथ त्रिकाल।
विशद भाव से गा रहे, उनकी हम जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय शीतलनाथ सुधीर धीर, जय ज्ञान सुधामृत धरणधीर।
जय धर्म शिरोमणि परम वीर, जय भव सागर के श्रेष्ठ तीर।।
जय भद्दलपुर में जन्म लीन, जय दृढ़रथ नृप शुभ राज कीन।
जय मात सुनन्दा गर्भ पाय, सपने सोलह देखे सुखाय।।
जय चैत कृष्ण आठे जिनेश, जिन गर्भ प्राप्त कीन्हे विशेष।
जय माघ वदी बारस सुजान, प्रभु जन्म लिए जग में महान।।
खुशियाँ छाई जग में अपार, वन्दन कीन्हे सुर बार-बार। सौधर्म
इन्द्र तव चरण आय, ऐरावत अपने साथ लाय।।
आई थी उसके शची साथ, लीन्हा बालक को स्वयं हाथ।
पाण्डुक वन को चल दिया इन्द्र, थे साथ वहाँ पर कई सुरेन्द्र।।
फिर न्हवन किए प्रभु का अपार, महिमा का जिसकी नहीं पार।
तव कल्पवृक्ष लक्षण सुजान, भक्ती कीन्हीं प्रभु की महान।।
चरणों में सब कीन्हे प्रणाम, प्रभु का शीतल जिन दिए नाम।

फिर माघ वदी बारस सुजान, प्रभु तप धारे जग में महान।।
कीन्हें जिन आतम का सुध्यान, फिर पाए केवल ज्ञान भान।
तिथि पौष वदी चौदस जिनेश, शत् इन्द्र किए भक्ति विशेष।।
तव समवशरण रचना महान, सुरगण मिलकर कीन्हें प्रधान।
फिर दिव्य देशना दिए नाथ, गणधर झेले तब झुका माथ।।
तब भव्य जीव पाए सुज्ञान, संयम धारे कई जीव आन।
फिर अश्विन सुदि आठे जिनेश, जिन कर्म नाश कीन्हे अशेष।।
सम्मेद शिखर से मुक्ति पाय, फिर सिद्ध शिला पहुँचे जिनाय।
शिवपुर का कीन्हे प्रभू राज, जिन पर हम करते सभी नाज।।
दोहा – शीतल नाथ जिनेन्द्र के, चरण झुकाऊँ माथ।
मोक्ष मार्ग में दीजिए, हम सबका प्रभु साथ।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – भाव सहित वन्दन करूँ, चरणों में हे ईश!
विशद भाव से पाद में, झुका रहे हम शीश।।

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री श्रेयांसनाथ पूजन–11

(स्थापना)

रवि केवल ज्ञान का शुभ अनुपम,अन्तर में जिनके चमक रहा।
भव्यों को रत्नत्रय द्वारा, जो पहुँचाते हैं मोक्ष अहा।।
संयम तप के पथ पर चलकर, जो पहुँच गये हैं शिवपुर में।
वह तीर्थंकर श्रेयांस जिनेश्वर, आन पधारें मम उर में।।
हमने अपनाए मार्ग कई, पर हमें मिला न मार्ग सही।

प्रभु बढ़े आप जिस मारग पर, हम भी अपनाएँ मार्ग वही।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जन्मादि जरा से हारे, इस जग के प्राणी सारे।
हम उससे बचने आये, ये नीर चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भाई संसार असारा, सन्तप्त जगत है सारा।
हम चन्दन श्रेष्ठ घिसाते, चरणों में नाथ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद कभी न पाया, प्राणी जग में भटकाया।
यह अक्षत श्रेष्ठ धुलाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।

हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना भाई, सारे जग में दुखदायी।
हम उससे बचने आए, प्रभु पुष्प चढ़ाने लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्षुधा रोग के रोगी, हैं साधु योगी भोगी।
अब मैटो भूख हमारी, नैवेद्य चढ़ाते भारी।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह महातम भारी, मोहित है दुनियाँ सारी।
हम मोह नशाने आए, प्रभु दीप जलाकर लाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन को दिया हवाला, कर्मों ने घेरा डाला।

हम कर्म नशाने आये, यह सुरभित गंध जलाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव बाधा पूर्ण नशाएँ।
यह फल ताजे हम लाए, चरणों में श्रेष्ठ चढ़ाए।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पद अनर्घ को पाये, हम अनुपम थाल भराये।
यह आठों द्रव्य मिलाते, प्रभु चरणों श्रेष्ठ चढ़ाते।।
जय-जय श्रेयांस अविकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।
हम भाव सहित गुण गाते, चरणों में शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

ज्येष्ठ वदी षष्ठी है पावन, सिंहपुरी नगरी में आन।
गर्भकल्याण प्राप्त किए शुभ, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी तिथि ग्यारस को, पाए जन्म श्रेयांस कुमार।
विमलराज रानी विमला के, गृह में हुआ मंगलाचार।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करते भक्ति भाव से।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, रत्नत्रय की नाव से।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशी फाल्गुन कृष्णा की, श्री श्रेयांसनाथ भगवान।
राग-द्वेष तज दीक्षा धारे, सर्व लोक में हुए महान्।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयासंनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चामर)

माघ कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री श्रेयांस तीर्थेश, आप हुए सुमंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णमासी माह श्रावण, सम्मेदगिरि से ध्यान कर।
श्रेय जिन स्वधाम पहुँचे, जगत् का कल्याण कर।।
हम कर रहे पूजा प्रभू की, श्रेष्ठ भक्ती भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभू पद में चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्ताय श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

विमल राय विमला के नन्दन, श्री श्रेयांस जिनराज महान।
सिंहपुरी में जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात योजन का समवशरण शुभ, पाए श्रेयांस नाथ भगवान।
तप्त स्वर्ण सम काया वाले, गेंडा चिन्ह रही पहिचान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांस नाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख चौरासी वर्ष की आयु, जिन श्रेयांस की रही महान।
अस्सी धनुष रही ऊँचाई, गुण अनन्त पाए भगवान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सौधर्मादि' रहे सतत्तर, जिन श्रेयांस के गणधर साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।

दु:खहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम: श्री श्रेयांसनाथस्य 'सौधर्मादि' सप्तसप्तति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – इन्द्र सुरासुर चरण में, झुकते हैं भूपाल।
श्री श्रेयांस जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

(काव्य छन्द)

जय-जय श्रेयांसनाथ, प्रभु आप कहाए।
जय-जय जिनेन्द्र आप, तीर्थेश पद पाए।।
प्रभु सिंहपुरी नगरी में, जन्म लिया है।
विमला श्री माता को, प्रभु धन्य किया है।।
राजा विमल प्रभु के, प्रभु लाल कहाए।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण, अष्टमी को गर्भ में आए।।
फल्गुन वदी ग्यारस, प्रभु जन्म पाए हैं।
सौधर्म आदि इन्द्र, चरण सिर झुकाए हैं।।
पाण्डुक शिला पे जाके, अभिषेक कराया।
गेण्डा का चिन्ह देख, सारे जग को बताया।।
श्रेयांस नाथ जिनवर का, नाम तब दिया।
आके शची ने प्रभु का, श्रृंगार शुभ किया।।
इक्कीस लाख वर्ष का, कुमार काल है।
युवराज सुपद पाया, प्रभु ने विशाल है।।

अस्सी धनुष की जिनवर, शुभ देह पाए हैं।
आयु चौरासी लाख वर्ष की गिनाए हैं।।
श्री का विनाश देख, वैराग्य धर लिया।
फाल्गुन वदी सुग्यारस, प्रभु ध्यान शुभ किया।
जाके मनोहर वन में, तेला किए प्रभो।
फिर घातिया विनाश करके, हो गये विभो।।
शुभ माघ की अमावस का, दिन शुभम रहा।
कैवल्य ज्ञान पाये, श्रेयांस जिन अहा।।
रचना समवशरण की, तब देव शुभ किए।
प्रभु के चरण में ढोक आके, देव सब दिए।।
ॐकार रूप दिव्य ध्वनि, दीन्हे प्रभु अहा।
जीवों के लिए धर्म का, साधन महा रहा।।
धर्मादि सात सत्तर, गणधर थे पास में।
जो दिव्य देशना की, रहते थे आस में।।
करके विहार जिनवर, सम्मेद गिरि गये।
आश्चर्य वहाँ देवों ने, किए कुछ नये।।
श्रावण की पूर्णिमा को, सब कर्म नसाए।
फिर सिद्ध शिला पर, अपना धाम बनाए।।
शाश्वत अखण्ड सुख फिर, पाए प्रभु अहा।
वह सौख्य प्राप्त करने का, भाव मम रहा।।
दोहा – श्री श्रेयांस जिनदेव जी, करो श्रेय का दान।
दाता तीनों लोक के, श्रेयस् करो प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.

स्वाहा।

दोहा – जो पद पाया आपने, शाश्वत रहा महान।
वह पद पाने के लिए, किया 'विशद' गुणगान।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री वासुपूज्य पूजन–12

(स्थापना)

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतीदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य तुम लोक पूज्य, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हम काल अनादी से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव–भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।

हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।
अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभू, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हम, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदिक सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।

मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ति आदिक तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं

निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपो मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषी महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

वसुपूज्य नृप जयावती सुत, वासुपूज्य जी कहलाए।
चम्पापुर में गर्भ जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष प्रभु जी पाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाये नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साढ़े छह योजन का भाई, वासुपूज्य का समवशरण।
लाल रंग में शोभा पाते, श्री जिनेन्द्र भव ताप हरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जी अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लाख बहत्तर वर्ष की आयु, वासुपूज्य की कही विशेष।
सत्तर धनुष रही ऊँचाई, भैंसा लक्षण पाए जिनेश।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री मंदर आदिक छियासठ शुभ, गणधर वासुपूज्य के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम: श्री वासुपूज्यस्य 'मंदरादि' षट्वष्टि: गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।
वसु द्रव्यों से पूजकर, करूँ विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभु प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभु पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभू पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभू सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोकालोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभू पद भूप।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।
ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद-बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।
अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बँधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।
धरें जब गुप्ति समिति सुधर्म, तवै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।
रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्त्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभू तब धन्य किए सुविचार, प्रभू तप हेतु किए सुविहार।
तवै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभू निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तब सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।

तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि अनंत सुखाय।।
रचें हम पूजा सुभाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।

(छंद घत्तानंद)

जय-जय जिनदेवं, हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित शीलधरं।
भव भय हरतारं, शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **चम्पापुर में ही प्रभू, पाए पंच कल्याण।**
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री विमलनाथ जिन पूजा-13

(स्थापना)

विमलनाथ के चरण कमल में, सादर हम करते वन्दन।
पुष्पाञ्जलि करके चरणों में, करते हैं हम अभिनन्दन।।
विमल गुणों के धारी जिन प्रभु, भाव सहित करते अर्चन।
हृदय कमल के सिंहासन पर, करते हम प्रभु आह्वानन।
चरण कमल में आए हम प्रभु, तुमसे है कुछ अपनापन।
तीन योग से तीन काल में, करते हम शत् बार नमन।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - चौबीसी पूजन की)

होवे जन्मादि विनाश, निर्मल जल लाए।
चरणों में तव हे नाथ ! चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव आताप विनाश, चन्दन घिस लाए।
तव पद चर्चन को नाथ, चरणों में आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने हेतु, प्रभु चरणों आए।
यह उत्तम अक्षत नाथ ! चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हो काम वासना नाश, भावना हम भाए।
यह पुष्प सुगन्धित नाथ, चढ़ाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो क्षुधा व्याधि का नाश, चरणों सिर नाए।
लेकर ताजे नैवेद्य, चढ़ाने को आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोह तिमिर का नाश, चरणों हम आए।
यह घृत के पावन दीप, जलाकर के लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वसु कर्मों का नाश, शरण में हम आए।
यह अष्ट गंध शुभ साथ, जलाने को लाए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हो मोक्ष महल में वास, चढ़ाने फल लाए।
राखो प्रभु मेरी लाज, भक्त चरणों आए।।
हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

पाएँ हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य देने लाए।
होवे सिद्धों में वास, भावना यह भाए।।

हे विमलनाथ ! भगवान, विमल गुण के धारी।
करुणा प्रभु करो प्रदान, हे करुणाकारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

ज्येष्ठ वदी दशमी प्रभू, सुश्यामा उर आन।
नगर कम्पिला अवतरे, विमलनाथ भगवान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी चौथ को, विमलनाथ भगवान।
नगर कम्पिला जन्म से, हो गया सर्व महान्।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।2।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

सुदि माघ चौथ विमलेश, जिन दीक्षा धारी।
पाए प्रभु सुगुण विशेष, जगत् मंगलकारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चामर छन्द)

माघ माह शुक्ल पक्ष, तिथि षष्ठी मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र विमलनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।4।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्ण षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

विमलनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
कृष्ण पक्ष आठें आषाढ़ की, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

(शम्भू छन्द)

माँ श्यामा सुव्रत वर्मा के, पुत्र कहे श्री विमल जिनेश।
नगर कम्पिला जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद से मोक्ष विशेष।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

छह योजन के समवशरण में, विमलनाथ जी शोभ रहे।
तप्त स्वर्ण सम आभा वाले, सूकर लक्षण युक्त कहे।।

गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साठ लाख वर्षों की आयू, विमल नाथ की रही महान।
साठ धनुष तन की ऊँचाई, गुण अनन्त पाए भगवान।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विमल नाथ के 'जय' आदिक शुभ, पचपन गणधर रहे महान।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, को हम झुका रहे हैं माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री विमलनाथस्य 'जयादि' पंचपंचाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – विमल गुणों के कोष हैं, विमल नाथ भगवान।
गाते हैं जयमालिका, करने निज कल्याण।।

(काव्य छन्द)

विमल नाथ जी विमल गुणों के धारी रे।
तीर्थंकर पदवी के जो अधिकारी रे।।
महिमा जिनकी इस जग से है न्यारी रे।

सर्व जगत में जिनवर मंगलकारी रे ।।
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य के धारी रे ।
सुख अनन्त के होते जिन अधिकारी रे ।।
तीर्थंकर जिन होते हैं अविकारी रे ।
महिमा जिनकी होती विस्मयकारी रे ।।
समवशरण होता है महिमाशाली रे ।
भवि जीवों को देता है खुशहाली रे ।।
अष्ट भूमियाँ जिसमें सुन्दरआली रे ।
गंधकुटी है तीन पीठिका वाली रे ।।
तीन गती के जीव सभा में भाई रे ।
पूजा का सौभाग्य जगाते भाई रे ।।
मुनी आर्यिका देव देवियाँ भाई रे ।
नर पशु के सब इन्द्र मिले सुखदायी रे ।।
देव कई अतिशय दिखलाते भाई रे ।
करते है गुणगान हृदय हर्षाई रे ।।
प्रातिहार्य वसु प्रगटित होते भाई रे ।
तरु अशोक है शोक निवारी भाई रे ।।
भामण्डल सिंहासन अनुपम भाई रे ।
देव दुन्दुभि बजती है सुखदायी रे ।।
चौंसठ चँवर ढौरते सुरपति भाई रे ।
गंधोदक की वृष्टी हो सुखदायी रे ।।
छत्र त्रय की शोभा कही न जाई रे ।
दिव्य देशना खिरती जग सुखदायी रे ।।

कमलाशन पर अधर विराजे भाई रे।
जग में अनुपम है प्रभु की प्रभुताई रे।।
सर्व कर्म का नाश किए जिनराई रे।
सिद्ध शिला पर वास किए तब भाई रे।।
जिनकी महिमा जिनवाणी में गाई रे।
सौख्य अनन्तानन्त प्रभू उपजाई रे।।
हमने भी यह शुभम् भावना भाई रे।
मुक्ति वधू को हम भी पाएँ भाई रे।।
मोक्ष मार्ग की विधि, श्रेष्ठ अपनाई रे।
आज परम यह श्रेष्ठ घड़ी शुभ आई रे।।

दोहा – विमल नाथ के चरण में, पूरी होगी आस।
मोक्ष महल को पाएँगे, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – तव चरणों में आए हम, विमल गुणों के नाथ।
विमल नाथ तव चरण में, 'विशद' झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अनन्तनाथ जिन पूजन–14

(स्थापना)

प्रभु अनन्त गुण पाने वाले, जिन अनन्त कहलाए हैं।
ध्यान योग के द्वारा प्रभु जी, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।
हे अनन्त ! भगवन्त आपके, चरणों हम करते अर्चन।

मोक्ष महल का पंथ दिखाओ, करते उर में आह्वानन्।
मिला और न कोई हमको, मोक्ष मार्ग का राही नाथं।
आकर हमको मार्ग दिखाओ, नाथ निभाओ मेरा साथ।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल नन्दीश्वर)

यह प्रासुक निर्मल नीर, कलशा पूर्ण भरूँ।
पाऊँ भवदधि का तीर, धारा तीन करूँ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन ले केसर गार, कंचन पात्र भरूँ।
चरणों में चर्चूं नाथ !, भव संताप हरूँ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले तन्दुल अमल अखण्ड, अनुपम थाल भरूँ।

पाऊँ अक्षय पद नाथ !, चरणों पुञ्ज धरूँ ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो ।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह परम सुगन्धित पुष्प, चढ़ाकर हर्षाए ।
करने भव ताप विनाश, चरणों हम आए ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो ।
भव्यों के तुम हे नाथ ! भाग्य विधाता हो ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे घृत के नैवेद्य, थाली भर लाए ।
हो क्षुधा रोग का नाश, चढ़ाने को आए ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो ।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, अग्नी में जारी ।
हो मोह ताप का नाश, मिथ्या तमहारी ।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो ।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति

स्वाहा।

अग्नी में खेऊँ धूप, सुरभित मनहारी।
करके कर्मों का नाश, होऊँ अविकारी।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल ले रसदार, थाली भर लाए।
पाने मुक्ती फल सार, चढ़ाने को आए।।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन आदि मिलाय, अर्घ्य बनाते हैं।
पद पाने हेतु अनर्घ, श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
जय-जय अनन्त भगवान, जग के त्राता हो।
भव्यों के तुम हे नाथ !, भाग्य विधाता हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

अनंतनाथ भगवान का, हुआ गर्भ कल्याण।
एकम् कार्तिक कृष्ण की, जयश्यामा उर आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की द्वादशी, सिंहसेन दरबार।
जन्मे प्रभो अनंत जिन, हुआ मंगलाचार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

बारस वदि ज्येष्ठ महान्, हुए प्रभु अविकारी।
श्री अनंतनाथ भगवान, बने थे अनगारी।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द चामर)

चैत कृष्ण की अमावस, प्राप्त किए मंगलम्।
श्री जिनेन्द्र अनंतनाथ, ज्ञान रूप मंगलम्।।
कर्म चार नाश आप, ज्ञान पाए मंगलम्।
दिव्यध्वनि आप दिए, सौख्यकार मंगलम्।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

श्री अनंत जिन चैत अमावस, मोक्ष कई मुनियों के साथ।

गिरि सम्मेद शिखर से भगवन्, बने आप शिवपुर के नाथ।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ती पथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

हरीषेण सुरजा माँ के गृह, नगर अयोध्या जन्म लिए।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती अनन्तनाथ जी प्राप्त किए।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साढ़े पाँच योजन का सुन्दर, अनन्त नाथ का समवशरण।
तप्त स्वर्ण सम आभा तन की, छियालिस मूलगुण किए वरण।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयू तीस लाख वर्षों की, अनन्तनाथ की रही महान।
धनुष पचास रही ऊँचाई, सेही प्रभु की है पहचान।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री अनन्त जिनवर के गणधर, आगम में बतलाए पचास।
'अरिष्टादिक' कई अन्य मुनीश्वर, के पद में हो मेरा वास।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अनन्तनाथस्य 'अरिष्टादिक' पंचाशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – चिन्मय चिंतामणि प्रभु, गुण अनन्त की खान।
गाते हम जय मालिका, हे अनन्त ! भगवान।।

(छन्द चामर)

दर्श करके आपका, यह कमाल हो गया।
अर्च के पादारविन्द, मैं निहाल हो गया।
धन्य यह घड़ी हुई, व धन्य जन्म हो गया।
धन्य नेत्र हो गये, प्रभु धन्य शीश हो गया।।
पूज्य नाथ आप हैं, मैं पुजारी हो गया।
देशना से आपकी, मोह दूर हो गया।।
धन्य आत्म तत्त्व का भी, ज्ञान प्राप्त हो गया।
मोह व मिथ्यात्व नाथ, आज मेरा खो गया ।।
आत्मा अनन्त है, अनन्त दीप्तिमान है।
गुण अनन्त की निधान, आत्म कीर्तिमान है।
दर्शज्ञान वीर्य शुभ, अनन्त सौख्यवान है।
निर्विकार चेतना स्वरूप की निधान है।।

आत्मज्ञान ध्यान से, सर्व कर्म नाश हो।
एक आत्म ज्ञान से, राग का विनाश हो।
आत्म ज्ञान हीन जीव, लोक में भ्रमाएगा।
साम्यभाव हीन कभी, मोक्ष नहीं पाएगा।।
मोक्ष धाम दे यही, कोइ अन्य से न पाएगा।
स्वात्म ज्ञान ध्यान हीन, ठोकरें ही खाएगा।।
सौख्य दु:ख जन्म मृत्यु, शत्रु कोई मित्र हो।
लाभ या अलाभ में भी, साम्यता पवित्र हो।।
साम्य भाव प्राप्त हो, न राग न विकार हो।
कोई भी उपसर्ग हो, शत्रु का प्रहार हो।।
नाथ आप पादमूल, एक ही है चाहना।
मोक्ष मार्ग प्राप्त हो वश, और कोई चाह ना।।
कर रहे हैं आप से हम, नाथ यही प्रार्थना।
अष्ट द्रव्य साथ ले प्रभु, कर रहे हम अर्चना।।
बार-बार हाथ जोड़, कर रहे हम वन्दना।
अष्ट कर्म का प्रभु अब, होय कभी बन्ध ना।।

दोहा- ब्रह्मा तुम विष्णू तुम्हीं, नारायण तुम राम।
तुम ही शिव जिनवर-तुम्हीं, चरणों 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(आडिल्य छन्द)

जिन अनन्त भगवान आपका नाम है।
चरणों प्रभू अनन्तानन्त प्रणाम है।।

तव गुण पाने आए हैं हम भाव से।
पूजा अर्चा वन्दन करते चाव से।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री धर्मनाथ जिन पूजन-15

(स्थापना) (वीर छन्द)

हे धर्मनाथ ! हे धर्मतीर्थ !, तुम धर्म ध्वजा को फहराओ।
तुम मोक्ष मार्ग के नेता हो, प्रभु राह दिखाने को आओ।।
तुमने मुक्ती पद वरण किया, तव चरणों हम करते अर्चन।
मम हृदय कमल के बीच कर्णिका, में आकर तिष्ठो भगवन।।
भक्तों ने भाव सहित भगवन्, भक्ती के हेतु पुकारा है।
न देर करो उर में आओ, यह तो अधिकार हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल जल भर लाएँ, चरणों में धार कराएँ।
जन्मादिक रोग नशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन यह श्रेष्ठ घिसाए, पद में अर्चन को लाए।
संसार ताप विनशाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय अक्षत लाए, अक्षय पद पाने आए।
प्रभु अक्षय पदवी पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन के पुष्प मँगाए, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए।
प्रभु काम बाण नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे नैवेद्य बनाए, हम क्षुधा नशाने आये।
प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, भव से मुक्ती मिल जाए।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह नशाने आए, अनुपम यह दीप जलाए।
प्रभु मोह नाश हो जाए, भव से मुक्ती मिल जाये।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।

तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी यह धूप बनाए, अग्नी से धूम उड़ाएँ।
प्रभु कर्म नाश हो जाएँ, भव सागर से तिर जायँ ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विविध सरस फल लाए, ताजे हमने मँगवाए।
हम मोक्ष महाफल पाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आठों द्रव्य मिलाए, यह पावन अर्घ्य बनाए।
हम पद अनर्घ पा जाएँ, भव सागर से तिर जाएँ ।।
जय धर्मनाथ जिन स्वामी, तुम हो प्रभु अन्तर्यामी।
तव चरण शरण को पाते, प्रभु चरणों शीश झुकाते ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य (दोहा)

आठें शुक्ल वैशाख की, मात सुव्रता जान।
जिनके उर में अवतरे, धर्मनाथ भगवान ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ ।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टम्यांशुक्ला गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं

निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी तेरस तिथी, जन्मे धर्म जिनेन्द्र।
करते हैं अभिषेक सब, सुर-नर-इन्द्र महेन्द्र।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(रोला छन्द)

तेरस सुदि माघ महान्, प्रभो दीक्षा धारे।
श्री धर्मनाथ भगवान, बने मुनिवर प्यारे।।
हम चरणों आए नाथ, अर्घ्य चढ़ाते हैं।
महिमा तव अपरम्पार, फिर भी गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष शुक्ला पूर्णिमा को, हुए मंगलकार हैं।
धर्म जिन तीर्थेश ज्ञानी, कर्म घाते चार हैं।।
जिन प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

ज्येष्ठ चतुर्थी शुक्ल पक्ष की, धर्मनाथ जिनवर स्वामी।
गिरि सम्मेद शिखर से जिनवर, बने मोक्ष के अनुगामी।।

अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्तीपथ दर्शाओ, बनो प्रभू मम् पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

(शम्भू छन्द)

मात सुव्रता भानुराय गृह, जन्मे धर्म नाथ भगवान।
रत्नपुरी को धन्य किए प्रभु, गिरि सम्मेदशिखर निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच योजन का समवशरण है, धर्मनाथ का अतिशयकार।
तप्त स्वर्ण सम आभा तन की, वज्रदण्ड लक्षण मनहार।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आयू है दश लाख वर्ष की, छियालिस मूलगुणों के नाथ।
एक सौ अस्सी हाथ प्रभू का, अवगाहन भी जानो साथ।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.

स्वाहा।

'अरिष्ट सेनादिक' तैतालिस, धर्मनाथ के कहे गणेश।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, धारे स्वयं दिगम्बर भेष।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य 'अरिष्टसेनादि' त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पूजा कर जिन राज की, जीवन हुआ निहाल।
धर्मनाथ भगवान की, गाते अब जयमाल।।

(तर्ज – भक्ति बेकरार है)

धर्मनाथ भगवान हैं, गुण अनन्त की खान हैं।
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, करते जग कल्याण हैं।।टेक।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय करके, रत्नपुरी में आये जी।
मात सुव्रता भानू नृप के, गृह में मंगल छाये जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
रत्नपुरी में देवों ने कई, रत्न श्रेष्ठ वर्षाए जी।
दिव्य सर्व सामग्री लाकर, नगरी खूब सजाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
आठें सुदि वैशाख माह में, गर्भकल्याण पाए जी।
देव सभी हर्षित होकर के, अतिशय मंगल गाए जी।।

धर्मनाथ भगवान ...

हम भी शिव पद पाने की शुभ, विशद भावना भाते जी।
तीन योग से प्रभु चरणों में, सादर शीश झुकाते जी।।

धर्मनाथ भगवान ...

त्रयोदशी शुभ माघ शुक्ल की, जन्मोत्सव प्रभु पायाजी।
पाण्डुक वन में इन्द्रों द्वारा, शुभ अभिषेक कराया जी।।

धर्मनाथ भगवान ...

वज्र दण्ड लख दांये पग में, नामकरण शुभ इन्द्र किया।
धर्म ध्वजा के धारी अनुपम, धर्मनाथ शुभ नाम दिया।।

धर्मनाथ भगवान ...

अष्ट वर्ष की उम्र प्राप्त कर, देशव्रतों को धारा जी।
युवा अवस्था में राजा पद, प्रभु ने श्रेष्ठ सम्हारा जी।।

धर्मनाथ भगवान ...

त्रयोदशी को माघ शुक्ल की, संयम पथ अपनाया जी।
पंच मुष्ठि से केश लुंचकर, रत्नत्रय शुभ पाया जी।।

धर्मनाथ भगवान ...

उभय परिग्रह त्याग प्रभू ने, आतम ध्यान लगाया जी।
धर्म ध्यान कर शुक्ल ध्यान का, अनुपम शुभ फल पाया जी।।

धर्मनाथ भगवान ...

चार घातिया कर्मनाश कर, केवल ज्ञान जगाया जी।
रत्नमयी शुभ समवशरण तब, इन्द्रों ने बनवाया जी।।

धर्मनाथ भगवान ...

गंध कुटी में कमलाशन पर, प्रभु ने आसन पाया जी।

दिव्य देशना देकर प्रभु ने, सब का मन हर्षाया जी।।
धर्मनाथ भगवान ...
चौथ कृष्ण की ज्येष्ठ माह में, सारे कर्म नशाए जी।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर पदवी पाए जी।।
धर्मनाथ भगवान ...

दोहा - धर्मनाथ जी धर्म का, हमें दिखाओ पंथ।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, होय कर्म का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - रत्नत्रय की नाव से, पार करें संसार।
'विशद' भावना वश यही, पावें भव से पार।।

।।इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शांतिनाथ पूजन-16

(स्थापना)

हे शांतिनाथ ! हे विश्वसेन सुत, ऐरादेवी के नन्दन।
हे कामदेव ! हे चक्रवर्ति ! है तीर्थंकर पद अभिनन्दन।।
हो शांति हमारे जीवन में, यह सारा जग शांतीमय हो।
वसु कर्म सताते हैं हमको, हे नाथ ! शीघ्र उनका क्षय हो।।
यह शीश झुकाते चरणों में, आशीष आपका पाने को।
हम पूजा करते भाव सहित, अपना सौभाग्य जगाने को।।
तुम पूज्य हुए सारे जग में, हम पूजा करने आए हैं।
आह्वानन् करने हेतु नाथ !, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

हे नाथ ! नीर को पीकर हम, इस तन की प्यास बुझाते हैं।
किन्तू कुछ क्षण के बाद पुनः, फिर से प्यासे हो जाते हैं।।
है जन्म जरा मृत्यू दुखकर, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।
हम नीर चढ़ाते चरणों में, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! हमारे इस तन को, चन्दन शीतल कर देता है।
आता है मोह उदय में तो, सारी शांती हर लेता है।।
हम भव आतप से तप्त हुए, हे नाथ ! पूर्ण इसका क्षय हो।
यह चन्दन अर्पित करते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! लोक में क्षयकारी, सारे पद हमने पाए हैं।
न प्राप्त हुआ है शाश्वत पद, उसको पाने हम आए हैं।।
हम पूजा करते भाव सहित, इस पूजा का फल अक्षय हो।
शुभ अक्षत चरण चढ़ाते हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! सुगन्धी पुष्पों की, मन के मधुकर को महकाए।
किन्तू सुगन्ध यह क्षयकारी, जो हमको तृप्त न कर पाए।।
है काम वासना दुखकारी, अब पूर्ण रूप इसका क्षय हो।

हम पुष्प चढ़ाते हैं पुष्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय काम बाण विघ्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस व्यंजन से नाथ सदा, हम क्षुधा शांत करते आए।
किन्तू हम काल अनादी से, न तृप्त अभी तक हो पाए।।
यह क्षुधा रोग करता व्याकुल, इसका हे नाथ ! शीघ्र क्षय हो।
नैवेद्य समर्पित करते हैं, मम् जीवन भी मंगलमय हो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक से हुई रोशनी तो, खोती है बाह्य तिमिर सारा।
छाया जो मोह तिमिर जग में, वह रोके ज्ञान का उजियारा।।
मोहित करता है मोह महा, यह मोह नाथ मेरा क्षय हो।
हम दीप जलाकर लाए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में गंध जलाने से, महकाए चारों ओर गगन।
किन्तू कर्मों का कभी नहीं, हो पाया उससे पूर्ण शमन।।
हैं अष्ट कर्म जग में दुखकर, उनका अब नाथ मेरे क्षय हो।
हम धूप जलाने आए हैं, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल को पाने भटक रहे, जग के सब फल निष्फल पाए।
हम भटक रहे हैं सदियों से, वह फल पाने को हम आए।।
दो श्रेष्ठ महाफल मोक्ष हमें, हे नाथ ! आपकी जय जय हो।

हैं विविध भांति के फल अर्पित, मम् जीवन भी शांतीमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्ट द्रव्य हम लाए हैं, हमने शुभ अर्घ्य बनाया है।
पाने अनर्घ पद प्राप्त प्रभू, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाया है।।
हमको डर लगता कर्मों से, हे नाथ ! दूर मेरा भय हो।
हम अर्घ्य चढ़ाते भाव सहित मम् जीवन भी शांतीमय हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

माह भाद्र पद कृष्ण पक्ष की, तिथी सप्तमी रही महान्।
चय कीन्हे सर्वार्थसिद्धि से, पाए आप गर्भ कल्याण।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूंजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तम्यां गर्भमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष में, चतुर्दशी है सुखकारी।
तीन लोक में शांति प्रदाता, जन्म लिए मंगलकारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी शुभ रही महान् ।
केश लुंच कर दीक्षाधारी, हुआ आपका तप कल्याण।।

स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष माह में शुक्ल पक्ष की, दशमी हुई है महिमावान।
चार घातिया कर्म विनाशी, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय-जय कार।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानमङ्गल मण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की, चतुर्दशी मंगलकारी।
गिरि सम्मेद शिखर से अनुपम, मोक्ष गये जिन त्रिपुरारी।।
स्वर्ग लोक से पृथ्वी तल तक, गगन गूँजता रहा अपार।
भवि जीवों ने मिलकर बोला, शांति नाथ का जय जय कार।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्ष मङ्गलमण्डिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

विश्वसेन ऐरा देवी के शांतिनाथ जी पुत्र महान।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, तीर्थराज पर है निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यो: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति नाथ के समवशरण का, साढ़े चार योजन विस्तार।

तप्त स्वर्ण सम तन अति सुन्दर, हिरण चिन्ह शोभे मनहार ।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लाख वर्ष की आयू अनुपम, पाए शांतीनाथ जिनेश।
चालिस धनुष की ऊँचाई शुभ, त्रय पद पाए प्रभू विशेष।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शांतिनाथ स्वामी के गणधर, 'चक्रायुध' आदी छत्तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री शांतिनाथस्य 'चक्रायुधादि' षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **शान्तिनाथ की भक्ति से, शान्ती होय त्रिकाल।**
वन्दन करते भाव से, गाते हैं जयमाल ।।

तर्ज – मेरे मन मंदिर में आन पधारो ...

मेरे हृदय कमल पर आन, विराजो शांतिनाथ भगवान।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते ।।

जिनका करते निशदिन ध्यान – विराजो ...।
प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से आए, देवों ने तब हर्ष मनाए ।
भारी किया गया यशगान – विराजो ... ।।
प्रभु का जन्म हुआ मन भावन, रत्न वृष्टि तब हुई सुहावन ।
जग में हुआ सुमंगल गान – विराजो ... ।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, देवों ने उत्सव करवाया ।
मिलकर हस्तिनागपुर आन – विराजो ... ।।
काम देव पद तुमने पाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया ।
पाई चक्रवर्ति की शान – विराजो ... ।।
यह सब भोग जिन्हें न भाए, सभी त्याग जिन दीक्षा पाए ।
जाकर वन में कीन्हा ध्यान – विराजो ... ।।
तीर्थंकर पदवी के धारी महिमा जिनकी जग से न्यारी ।
तुमने पाए पञ्चकल्याण – विराजो ... ।।
तुमने कर्म घातिया नाशे, क्षण में लोकालोक प्रकाशे ।
पाये क्षायिक केवल ज्ञान – विराजो... ।।
ॐकार मय जिनकी वाणी, जन–जन की जो है कल्याणी ।
सारे जग में रही महान् – विराजो ... ।।
शेष कर्म भी न रह पाए, पूर्ण नाश कर मोक्ष सिधाए ।
पाए प्रभू मोक्ष कल्याण – विराजो ... ।।
जो भी शरणागत बन आया, उसको प्रभु ने पार लगाया ।
प्रभु जी देते जीवन दान – विराजो ... ।।
शांति नाथ शांती के दाता, अखिल विश्व के आप विधाता ।
सारा जग गाये यशगान – विराजो ... ।।

शरणागत बन शरण में आए, तव चरणों में शीश झुकाए ।
करलो हमको स्वयं समान – विराजो ... ।।
रोम–रोम में वास तुम्हारा, ऋणी रहेगा तव जग सारा ।
तुम हो जग में कृपा निधान – विराजो ... ।।
प्रभु जग मंगल करने वाले, दुखियों के दुख हरने वाले ।
तुमने किया जगत कल्याण – विराजो ... ।।
सारा जग है झूठा सपना, व्यर्थ करे जग अपना–अपना ।
प्राणी दो दिन का मेहमान – विराजो ... ।।
शांति नाथ हैं शांति सरोवर, शांति का बहता शुभ निर्झर ।
तुमसे यह जग ज्योर्तिमान – विराजो ... ।।

आर्या छन्द

शांति नाथ अनाथों के हैं, नाथ जगत में शिवकारी।
चरण शरण को पाने वाला, होता जग मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशकपरम शान्ति प्रदायकश्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोरठा – शांति मिले विशेष, पूजा कर जिनराज की।
रहे कोई न शेष, दुख दारिद्र सब दूर हों।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री कुन्थुनाथ जिन पूजन–17

(स्थापना)

कुन्थु जिन की अर्चना को, भाव से हम आए हैं।
पुष्प यह अनुपम सुगन्धित, साथ अपने लाए हैं।।

कामदेव चक्री जिनेश्वर, तीन पद के नाथ हैं।
जोड़कर द्वय हाथ अपने, पद झुकाते माथ हैं।।
हे नाथ ! हमको मोक्ष पथ का, मार्ग शुभ दर्शाइये।
प्रभु करुण होकर के हृदय में, आज मेरे आईये।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौबोला छन्द)

छानके निर्मल जल भर लाए, उसको गरम कराते हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, जिन पद श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर का पावन चंदन, केसर संग घिसा लाए।
भव आताप मिटाने हेतू, चरण चढ़ाने हम आए।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वासमती के अक्षय अक्षत, श्रेष्ठ चढ़ाने लाए हैं।

अक्षय पद पाने को भगवन्, चरण शरण में आए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

उपवन से शुभ पुष्प सुगन्धित, चुनकर के हम लाए हैं।
काम बाण की महावेदना, शीघ्र नशाने आए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य मनोहर, श्रेष्ठ बनाकर लाए हैं।
क्षुधा वेदना नाश हेतु प्रभु, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय घृत के दीप मनोहर, अतिशय यहाँ जलाते हैं।
मोह महातम नाश हेतु हम, जिनवर के गुण गाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति

स्वाहा।

अष्ट गंध मय धूप जलाकर, पूजा यहाँ रचाते हैं।
अष्ट कर्म के नाश हेतु हम, चरण शरण को पाते हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे-ताजे श्रेष्ठ सरस फल, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतू, भाव सहित गुण गाए हैं।।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक, चरुवर दीप जलाते हैं।
धूप और फल साथ मिलाकर, अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
कुन्थु नाथ की अर्चा करके, प्राणी सब हर्षाते हैं।
विनय भाव से वन्दन करके, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

श्रीमती के गर्भ में, कुंथुनाथ भगवान।
सावन दशमी कृष्ण की, पाए गर्भ कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय

अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम् सुदी वैशाख माह में, कुंथुनाथ जी जन्म लिए।
मात श्रीमती से जन्मे प्रभु, हस्तिनागपुर धन्य किए।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वैशाख सुदी एकम् तिथि पाय, दीक्षा पाए कुंथु जिनाय।
हुए स्वात्म रस में लवलीन, कर्म किए प्रभु क्षण में क्षीण।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

चैत्र शुक्ला तीज स्वामी, कुंथु जिन तीर्थेश जी।
ज्ञान केवल प्राप्त कीन्हें, दिए शुभ संदेश जी।।
जिन प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

कुंथुनाथ सम्मेदाचल से, मोक्ष गये मुनियों के साथ।
एकम् सुदी वैशाख माह को, बने आप शिवपुर के नाथ।।

अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

(शम्भू छन्द)

भूप शूरप्रभ श्रीमती के, कुन्थुनाथ जी पुत्र महान।
नगर हस्तिनापुर में जन्मे, गिरि सम्मेद है मुक्तीधाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार योजन का समवशरण शुभ, कुन्थुनाथ का रहा महान।
अतिशय आभा तप्त स्वर्ण सम, बकरा है प्रभु की पहचान।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस पंच कम लाख वर्ष की, आयू पाए कुन्थु जिनेश।
चौंतिस धनुष रही ऊँचाई, त्रय पद पाए प्रभु विशेष।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा हम, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुन्थुनाथ जिनवर के गणधर, 'अमृतसेनादी' पैंतीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री कुंथुनाथस्य 'अमृतसेनादि' पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – गुण गाते जिनदेव के, गुण पाने मनहार।
जयमाला गाते यहाँ, प्रभु की बारम्बार।।

(वेसरी छन्द)

कुन्थुनाथ तीर्थंकर स्वामी, केवल ज्ञानी अंतर्यामी।
उनकी हम जयमाला गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, नगर हस्तिानापुर उपजाए।
माता श्री मती को जानो, सूर्यसेन नृप पितु पहिचानो।
प्रभु ने अतिशय पुण्य कमाया, तीर्थंकर पदवी को पाया।
कामदेव की पदवी पाई, चक्रवर्ति पद पाए भाई।
तप्त स्वर्ण सम तन था प्यारा, मोहित जो करता था न्यारा।
चक्ररत्न प्रभु ने प्रगटाया, छह खण्डों पर राज्य चलाया।
होकर नव निधियों के स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।
चौदह रत्न आपने पाए, त्याग सभी संयम अपनाए।
तृण की भांति सब कुछ छोड़ा, सारे जग से नाता तोड़ा।

भोगों में जो नहीं लुभाए, परिजन उन्हें रोक न पाए।
केश लौंचकर दीक्षाधारी, संयम धार बने अनगारी।
निज आतम का ध्यान लगाए, संवर और निर्जरा पाए।
कर्म घातिया प्रभु ने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
समवशरण तब देव बनाए, भक्ति करके वह हर्षाए।
पाँच हजार धनुष ऊँचाई, समवशरण की जानो भाई।
बीस हजार सीढ़ियाँ जानों, अष्ट भूमिया अतिशय मानो।
कमलाशन पर जिन को जानो, अधर विराजें ऐसा मानो।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, जन-जन के मन तब हर्षाए।
प्रातिहार्य तब प्रगटे भाई, यह है जिन प्रभु की प्रभुताई।
कोई सद्श्रद्धान जगाते, कोई संयम को पा जाते।
लगें सभाएँ बारह भाई, जिनकी महिमा कही न जाई।
मुनि आर्यिका गणधर आवें, देव देवियाँ भाग्य जगावें।
मानव और पशु भी आते, भाव सहित प्रभु के गुण गाते।
योग निरोध प्रभु जी कीन्हें, कर्म नाश शिव पदवी लीन्हें।।

दोहा - भाते हैं यह भावना, शिव नगरी के नाथ।
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - चक्री काम कुमार जी, तीर्थंकर जिनदेव।
यही भावना है 'विशद', अर्चा करूँ सदैव।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अरहनाथ जिन पूजन-18

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द - भुजंग प्रयात)

प्रभो ! नीर निर्मल ये प्रासुक कराके,
चढ़ाने को लाये हैं कलशा भराके।।
प्रभो! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! गंध केशर घिसा के हम लाए,
भवताप के नाश हेतू हम आए।।
प्रभो! आपके हम गुणोगान गाते।

अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम थाल तन्दुल के हमने भराए,
विशद भाव अक्षय सुपद के बनाए।।
प्रभो! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सलौने सुगन्धित खिले फूल लाए,
प्रभो ! काम बाधा नशाने को आए।।
प्रभो! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने सरस ये बनाए,
क्षुधा रोग के नाश हेतू चढ़ाए।।
प्रभो! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! दीप घृत के मनोहर जलाए,

महामोह तम नाश करने को आए।।
प्रभो! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! धूप हमने दशांगी जलाई,
सुधी नाश कर्मों की मन में जगाई।।
प्रभो ! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! श्रेष्ठ ताजे सरस फल मँगाए,
महामोक्ष फल प्राप्त करने को आए।।
प्रभो ! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

मिलाके सभी द्रव्य का अर्घ्य लाए,
परम श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने आए।।
प्रभो ! आपके हम गुणोगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा- फाल्गुन शुक्ला तीज को,अरहनाथ भगवान।

मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिन अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं।।

जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभधाम।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करूँ प्रणाम।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभू अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

भूप सुदर्शन माँ मित्रा के, सुत हैं अरहनाथ शुभ नाम।
नगर हस्तिनापुर जन्मे प्रभु, गिरि सम्मेद है मुक्तीधाम।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ के समवशरण का, साढ़े तीन योजन विस्तार।
तप्त स्वर्ण वत् आभा तन की, नहीं गुणों का प्रभु के पार।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस चौरासी वर्ष प्रभू की, आयू का है श्रेष्ठ कथन।

तीस धनुष तन की ऊँचाई, त्रय पद का भी है वर्णन।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अरहनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री सुषेण' आदी थे तीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम: श्री अरहनाथस्य 'श्री सुषेणादि' त्रिंशत् गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जयमाला गाते परम, भाव सहित हे नाथ!
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

(छन्द टप्पा)

काम देव चक्री पद पाया, बने मोक्ष गामी।
तीर्थंकर की पदवी पाए, कुन्थुनाथ स्वामी।।
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
फाल्गुन कृष्ण तीज अवतारे, हस्तिनापुर स्वामी।
मात सुमित्रा के उर आये, अपराजित गामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।

मगसिर शुक्ला चौदस तिथि को, जन्म लिए स्वामी।
इन्द्रों ने अभिषेक कराया, जिनवर का नामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर है ... ।।
कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि को, बने विशद ज्ञानी।
समवशरण में कमलासन पर, अधर हुए स्वामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
चैत्र कृष्ण की तिथी अमावस, बने मोक्ष गामी।
अक्षय अनुपम सुख पाये तब, शिवपुर के स्वामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाये जिन स्वामी।
सिद्ध शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध बने नामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पावें स्वामी।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, बने मोक्ष गामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
संयम त्याग तपस्या करना, कठिन रहा स्वामी।
फिर भी हमने लक्ष्य बनाया, बन के अनुगामी।।
जिनेश्वर ... ।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय हितकारी, संयमधारी, गुण अनन्त के अधिकारी।
तुम हो अविकारी, ज्ञान पुजारी, सिद्ध सनातन अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - अरहनाथ के साथ में, हुए जीव कई सिद्ध।
सिद्ध दशा हमको मिले, जो है जगत् प्रसिद्ध।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मल्लिनाथ जिन पूजन-19

(स्थापना)

मोह मल्ल को जीतकर, बने धर्म के ईश।
चरण शरण के दास तव, गणधर बने ऋषीश।।
अनन्त चतुष्टय प्राप्त कर, पाए केवल ज्ञान।
मल्लिनाथ जिन का हृदय, करते हम आह्वान।।
भक्त पुकारें भाव से, हृदय पधारो नाथ!
पुष्प समर्पित कर चरण, झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

इन्द्रिय के विषयों की आशा, हम पूर्ण नहीं कर पाए हैं।
हे नाथ ! अतीन्द्रिय सुख पाने, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।

श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवभोगों में फँसे रहे हम, मुक्त नहीं हो पाए हैं।
भव आताप से मुक्ती पाने, चन्दन घिसकर लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भटके तीनों लोको में पर, स्वपद प्राप्त न कर पाए।
प्रभु अक्षय पद पाने हेतू यह, अक्षय अक्षत हम लाए।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पीड़ित हो काम व्यथा से कई, हम जन्म गँवाते आए हैं।
हो काम वासना नाश प्रभो!, हम पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा वेदना से व्याकुल, भव-भव में होते आए हैं।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहित करता है मोह कर्म, हम उसके नाथ! सताए हैं।
अब नाश हेतु इस शत्रू के, यह दीप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म के बन्धन में, बँधकर जग में भटकाए हैं।
अब नाश हेतु उन कर्मों के, यह धूप जलाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल हैं कितने सारे जग में, गिनती भी न कर पाए हैं।
वह त्याग मोक्ष फल पाने को, यह फल अर्पण को लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार वास दुखकारी है, हम इससे अब घबराए हैं।
पाने अनर्घ पद नाथ! परम, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री मल्लिनाथ जिनवर का दर्शन, जग में मंगलकारी है।
विशद भाव से प्रभु चरणों में, अतिशय ढोक हमारी है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

प्रभावती के गर्भ में, मल्लिनाथ भगवान।
चैत शुक्ल की प्रतिपदा, हुआ गर्भ कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन शुक्ला ग्यारस को प्रभु, जन्में मल्लिनाथ भगवान।
प्रभावति माँ कुंम्भराज के, गृह में हुआ था मंगलगान।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हों हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

मगसिर सुदी ग्यारस जिनदेव, मल्लिनाथ तप धारे एव।
केशलुंच कर तप को धार, छोड़ दिया सारा आगार।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।

पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

पौष कृष्णा दूज मल्लि, नाथ जिनवर ने अहा।
कर्मघाती नाश करके, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभू की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

फाल्गुन शुक्ला तिथि पञ्चमी, मल्लिनाथ स्वामी।
गिरि सम्मेदशिखर से जिनवर, बने मोक्षगामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

प्रभावति माँ कुम्भराज सुत, मिथिला नगरी जन्म लिए।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, मल्लिनाथ जी प्राप्त किए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ क्षेत्रस्य जन्म स्थान जनकजननी निर्वाणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीन योजन के समवशरण में, शोभित होते मल्लीनाथ।
तप्त स्वर्ण सम तन की शोभा, कलश चिन्ह है पग मेंसाथ।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पचपन सहस वर्ष की आयू, पाकर किए कर्म का नाश।
पच्चिस धनुष रही ऊँचाई, अनन्त चतुष्टय किए प्रकाश।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मल्लिनाथ जिनवर के गणधर, 'श्री विशाख'आदिक अठवीस।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम शीश।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करुणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री मल्लिनाथस्य 'विशाखाचार्यादि' अष्टाविंशति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

आतम के हित में प्रभु, छोड़ दिए जगजाल।

मल्लिनाथ भगवान की, गातें हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

जय-जय तीर्थंकर मल्लिनाथ, जय-जय शिव पदवी केधारी।
जय रत्नत्रय के सूत्र धार, जय मोक्ष महल के अधिकारी।।
तुम अपराजित से चय करके, मिथिलापुर नगरी में आए।
नृप कुम्भराज माँ प्रभावति, के गृह में बहु खुशियाँ लाए।।
सुदि चैत माह की तिथि एकम्, अश्विनी नक्षत्र जानो पावन।
प्रभु गर्भ में आए इसी समय, वह घड़ी हुई शुभ मनभावन।।
नव माह गर्भ में रहे प्रभु, शचियाँ कई सेवा को आईं।
हर्षित होकर प्रभु भक्ति में, कई दिव्य सामग्री भी लाईं।।
फिर मगसिर सुदी एकादशी को, प्रभु मल्लिनाथ ने जन्म लिया।
शुभ पुण्य के वैभव से प्रभु ने, तीनों लोकों को धन्य किया।।
शचियों ने जात कर्म कीन्हा, फिर इन्द्र ऐरावत ले आया।
शचि ने बालक को लेकर के, माया मयी बालक पधराया।।
फिर पाण्डुक शिला पर ले जाकर, इन्द्रों ने जय-जय कार किया।
अभिषेक कराया भाव सहित,तब पुण्य सुफल शुभ प्राप्त किया।।
अनुक्रम से वृद्धि को पाकर, प्रभु युवा अवस्था को पाए।
विद्युत की चंचलता को लखकर, संयम को प्रभु जी अपनाए।।
शुभ मगसिर सुदि एकादशि को,पौर्वाह्ण काल अतिशय जानो।
प्रभु बैठ जयन्त पालकी में, शाली वन में पहुँचे मानो।।
फिर नृपति तीन सौ के संग में, दीक्षा धर तेला धार लिया।
होकर एकाग्र प्रभु ने अनुपम,निज चेतन तत्त्व का ध्यान किया।।
फिर पौष कृष्ण की द्वितिया को, प्रभु केवल ज्ञान प्रकट कीन्हे।

तब देव बनाए समवशरण, प्रभु दिव्य देशना शुभ दीन्हे।।
शुभ फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी को, अश्वनी नक्षत्र प्रभु जी पाए।
सम्मेद शिखर पर जाकर के, प्रभु मुक्ति वधु को प्रगटाए।।
प्रभु का दर्शन अघ नाशक है, अनुपम सौभाग्य प्रदायक है।
जो बोधि समाधि का कारण, शुभ मोक्ष मार्ग दर्शायक है।।
जो भाव सहित अर्चा करता, वह अतिशय पुण्य कमाताहै।
सुख शांति प्राप्त कर लेता है, फिर मोक्ष महल को जाता है।।
प्रभु के गुण होते हैं अनन्त, गणधर भी नहिं कह पाते हैं।
गुणगान करें जो भव्य जीव, प्रभु के गुण वह प्रगटाते हैं।।
शुभ महिमा सुनकर हे प्रभुवर ! तव चरण शरण में आए हैं।
हम अष्ट गुणों को पा जाएँ, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय उपकारी संयम धारी, तीन लोक में पूज्य अहा।
त्रिभुवन के स्वामी विशद नमामी, तव शासन यह पूज्य रहा।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - मल्लिनाथ निज हाथ से, दीजे शुभ आशीष।
चरण शरण के भक्त यह, झुका रहे हैं शीश।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजन-20

(स्थापना)

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत प्रभु, के चरणों में करूँ नमन्।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, पद्मावती माँ के नन्दन।

मु{Zd«V Ymar ho ^d Ymar!,¶moJrída {OZda d§XZ&

ím[ZA[aîQJ«hem§{VhoVw, à^wH$aVohc‘h‘Amh²dmZZ²&
ho{OZoÝÐ! ‘‘²öX¶ H$‘b na,AmZmVw‘ ñdrH$ma H$amo&
MaU eaU H$m ^³V ~Zm bmo,BVZm gm CnH$ma H$amo&&

> ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

है अनादि की मिथ्या भ्रांती, समकित जल से नाश करूँ।
नीर सु निर्मल से पूजा कर, मृत्यू आदि विनाश करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नो कर्मों का मैं, रत्नत्रय से नाश करूँ।
शीतल चंदन से पूजा कर, भव आताप विनाश करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अविनश्वर पद पाने, निज स्वभाव का भान करूँ।
अक्षय अक्षत से पूजा कर,आतम का उत्थान करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

संयम तप की शक्ती पाकर, निर्मल आत्म प्रकाश करूँ।
पुष्प सुगंधित से पूजा कर, कामबली का नाश करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार का पालन करके, शिवनगरी में वास करूँ।
सुरभित चरु से पूजा करके, क्षुधा रोग का ह्रास करूँ।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।५।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पुण्य पाप आस्त्रव विनाश कर, केवल ज्ञान प्रकाश करूँ।
दिव्य दीप से पूजा करके, मोह महातम नाश करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।६।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट गुणों की सिद्धी करके, अष्टम भू पर वास करूँ।
धूप सुगन्धित से पूजा कर, अष्ट कर्म का नाश करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।७।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाकर भगवन्, आतम धर्म प्रकाश करूँ।
विविध फलों से पूजा करके, मोक्ष महल में वास करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भेद ज्ञान का सूर्य उदय कर, अविनाशी पद प्राप्त करूँ।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उर अनर्घ पद व्याप्त करूँ।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, पद पंकज में आए हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर के चरणों, सादर शीश झुकाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

श्रावण कृष्णा दोज सुजान, देव मनाए गर्भ कल्याण।
श्यामा माता के उर आन, राजगृही नगरी सु महान्।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।

पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी कृष्ण वैशाख सुजान, सुर नर किए जन्म कल्याण।
नृप सुमित्र के घर में आन, सबको दिए किमिच्छित दान।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभू पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कृष्ण दशम वैशाख महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
चंपक तरु तल पहुँचे नाथ, मुनि बनकर प्रभु हुए सनाथ।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नवमी कृष्ण वैशाख महान्, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।
सुरनर करते प्रभु गुणगान, मंगलकारी और महान्।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण द्वादशी महान्, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
मोक्ष पधारे श्री भगवान, नित्य निरंजन हुए महान्।।
तीन लोक में सर्व महान, पाए प्रभु पञ्च कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

नृप सुमित्र माता श्यामा के, सुत का मुनिसुव्रत है नाम।
राजगृही में जन्म लिए प्रभु, तीर्थराज है मुक्ती धाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाई योजन का समवशरण शुभ, मुनिसुव्रत का रहा महान।
कछुआ चिन्ह शोभता पग में, श्याम वर्ण के हैं भगवान।।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस हजार वर्ष की आयू , बतलाए प्रभु वीर जिनेश।

बीस धनुष तन की ऊँचाई, अतिशय पाये कई विशेष।।
दिव्य देशना देकर श्री जिन, करते भव्यों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते जिनवर कागुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मुनिसुव्रत के गणधर जानो, अष्टादश 'धारण' आदी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, हरते है सबकी व्याधी।।
दुख हर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।4।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम: श्री मुनिसुव्रतनाथस्य 'धारण' आदि अष्टादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **मुनिसुव्रत मुनिव्रत धरूँ,त्याग करूँ जगजाल।**
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, करता हूँ जयमाल।।

पद्धरि छंद

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान्,जय किए कर्म की प्रभूहान।
जय मोह महामद दलन वीर, दुर्द्धर तप संयम धरण धीर।।
जय हो अनंत आनन्द कंद, जय रहित सर्व जग दंद फंद।
अघ हरन करन मन हरणहार, सुखकरण हरण भवदुख अपार।।
जय नृप सुमित्र के पुत्र नाथ!,पदझुका रहे सुर नर सुमाथ।

जय श्यामामाँ के गर्भ आय, सावन वदि दुतिया हर्ष दाय।।
जय-जय राजगृही जन्म लीन, वैशाख कृष्ण दशमी प्रवीण।
जय जन्म से पाए तीन ज्ञान, जय अतिशय भी पाये महान्।।
तन सहसआठ लक्षण सुपाय, प्रभु जन्म लिए जग के हिताय।
सौधर्म इन्द्र को हुआ भान, राजगृह नगरी कर प्रयाण।।
जाके सुमेरु अभिषेक कीन, चरणों में नत हो ढोक दीन।
वैशाख कृष्ण दशमी सुजान, मन में जागा वैराग्य भान।।
कई वर्ष राज्य कर चले नाथ, इक सहस सु नृप भी चले साथ।
शुभ अशुभ राग की आग त्याग,हो गए स्वयं प्रभु वीतराग।।
नित आतम में हो गए लीन, चारित्र मोह प्रभु किए क्षीण।
प्रभु ध्यानी का हो क्षीण राग, वह भी हो जाए वीतराग।।
तीर्थंकर पहले बने संत, सबने अपनाया यही पंथ।
जिनधर्म का है वश यही सार, प्रभु वीतराग को नमस्कार।।
वैशाख वदी नौमी सुजान, प्रभु ने पाया कैवल्य ज्ञान।
सुर समवशरण रचना बनाय, सुर नर पशु सब उपदेशपाय।।
जय-जय छियालिस गुण सहित देव, शत् इन्द्र भक्ति वश करें सेव।
जय फाल्गुन वदि द्वादशी नाथ, प्रभु मुक्ति वधु को किए साथ।।

(छन्द घत्तानन्द)

मुनिसुव्रत स्वामी, अन्तर्यामी, सर्व जहाँ में सुखकारी।
जय भव भय हारी आनंदकारी, रवि सुत ग्रह पीड़ा हारी।।

ॐ ह्रीं शनि ग्रहअरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – मुनिसुव्रत के चरण का, बना रहूँ मैं दास।
भाव सहित वन्दन करूँ, होवे मोक्ष निवास।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नमिनाथ जिन पूजन–21

(स्थापना)

हे तीर्थंकर ! केवल ज्ञानी, हे नमीनाथ जिनवर स्वामी।
यह भक्त पुकारें भाव सहित, हे त्रिभुवन पति ! अन्तर्यामी।।
आह्वानन् करते हैं उर में, बनने तव आये अनुगामी।
सन्निकट होव मेरे भगवन्, तव बन जाएँ हम पथगामी।।
हम भक्त शरण में आए हैं, हे भगवन् ! यह अरदास लिए।
हमको शुभ मार्ग दिखाओगे, हम आये यह विश्वास लिए।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

कर्मों की ज्वाला धधक रही, हे नाथ ! बुझाने आये हैं।
हो जन्म जरादिक रोग नाश, हम नीर चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, हम ताप नशाने आये हैं।

हो भव आताप विनाश प्रभो ! हम गंध चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

न लोकालोक का अन्त कहीं, हम चतुर्गती भटकाए हैं।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, अक्षत अर्पण को लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है काम वासना दुखदायी, उसमें सदियों से भरमाए।
वह काम बाण विध्वंश हेतु, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग से व्याकुल हो, सब द्रव्य चराचर खाए हैं।
अब क्षुधा रोग के नाश हेतु, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति

स्वाहा।

हम मोह पास में फँसे हुए, पर वस्तू में अटकाए हैं।
अब मोह कर्म के नाश हेतु, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
हे नमिनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के बन्धन से, हम मुक्त नहीं हो पाए हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम इच्छा करके निज फल की, निष्फल फल पाते आए हैं।
अब मोक्ष महाफल हेतु प्रभो !, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम अवगुण को ही नाथ सदा, निज के गुण कहते आए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
हे नमीनाथ ! जिनवर स्वामी, मेरी विनती स्वीकार करो।
प्रभु सरस भावना के द्वारा, मेरे मन को हे नाथ ! भरो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

आश्विन वदी द्वितिया तिथि, नमीनाथ जिनदेव।
माँ विपुला उर अवतरे, पूजूँ उन्हें सदैव।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ती का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।1।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

दशमी कृष्ण आषाढ़ महान्, जन्में नमीनाथ भगवान।
भूप विजयरथ के गृहद्वार, भारी हुआ मंगलाचार।।
विशद हृदय से भाव विभोर, वन्दन करते हम कर जोर।
मन में जगी हमारे चाह, मोक्ष महल की पावें राह।।2।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अषाढ़ वदी दशमी को पाय, दीक्षा धारे नमी जिनाराय।
अविकारी हो वन में वास, आत्म तत्त्व का किए प्रकाश।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(हरि छन्द गीता)

मगसिर शुक्ला तिथी ग्यारस, नमी जिनवर ने अहा।
चउ कर्मघाती नाश कीन्हें, ज्ञान पाया है महा।।
जिन प्रभु की शुभ वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अब अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ

जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(टप्पा छन्द)

चतुर्दशी वैशाख कृष्ण की, नमीनाथ स्वामी।
मोक्ष गये सम्मेद शिखर से, जिन अंतर्यामी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चरणों में लाए।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, वंदन को आए।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

भूप विजय रथ विपुला के सुत, का है नमीनाथ शुभ नाम।
मिथिला नगरी जन्म लिए हैं, गिरि सम्मेद है मुक्तीधाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाए नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमीनाथ के समवशरण का, दो योजन जानो विस्तार।
नील कमल है चिन्ह प्रभू का, तप्त स्वर्ण सम तन मनहार।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश हजार वर्षों की आयू, पाकर किए कर्म विध्वंश।
पन्द्रह धनुष रही ऊँचाई, नहीं रहा दोषों का अंश।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नमीनाथ के सत्रह गणधर, जानो भाई 'सोमादी'।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हरते हैं सबकी व्याधी।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम: श्री नमिनाथस्य 'सोमादि' सप्तदश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – तीर्थंकर बनकर सभी, नाशे कर्म कराल।
नमीनाथ की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

श्री जिनवर ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
तीर्थंकर पदवी प्रगटाए, यह प्रभुता पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
पूर्वभवों में त्याग तपस्या, प्रभु ने अपनाई।
तीर्थंकर की प्रकृति बाँधी, अतिशय सुखदायी।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
विजयसेन गृह अपराजित से, मिथिलापुर भाई।
चयकर आये मात वप्रिला, के उर जिनराई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
दशें कृष्ण आषाढ़ वदी को, जन्म लिए भाई।
क्षीर नीर से मेरू गिरि पर, न्हवन हुआ भाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
श्वेत कमल शुभ लक्षण देखा, इन्द्र ने सुखदायी।
नमीराज तव नाम पुकारा, जय ध्वनि गुंजाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
दशें कृष्ण आषाढ़ वदी को, जाति स्मृति पाई।
अनुप्रेक्षा का चिन्तन करके, संत बने भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता, ने महिमा दिखलाई। जि...
निज आतम का ध्यान लगाकर, शक्ती प्रगटाई।
कर्म घातिया नशते केवल, ज्ञान जगा भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
समवशरण में दिव्य ध्वनि तब, प्रभु ने गुंजाई।
सम्यक् दृष्टी संयमधारी, बने जीव भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
मगसिर शुक्ला एकादशि को, शिव पदवी पाई।
मोक्ष महल के स्वामी हो गये, नमीनाथ भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...
अनुक्रम से हम मोक्ष मार्ग पर, बढ़े शीघ्र भाई।
वह पदवी हम भी पा जाएँ, जो प्रभु ने पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
मोक्ष मार्ग के अभिनेता ने, महिमा दिखलाई। जि...

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, धर्म ध्वजा के अधिकारी।
जय शिवपुर वासी, ज्ञान प्रकाशी, तीन लोक मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - जिनवर तीनों लोक में, जिन शासन सुखकार।
मंगलमय मंगल कहा, नमूँ अनन्तो बार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नेमिनाथ जिनपूजा-22

(स्थापना)

नेमिनाथ के श्रीचरणों में, भव्य जीव आ पाते हैं।
तीर्थंकर जिन के दर्शन से, सर्व कर्म कट जाते हैं।।
गिरि गिरनार के ऊपर श्रीजिन, को हम शीश झुकाते हैं।
हृदय कमल के सिंहासन पर, आह्वानन् कर तिष्ठाते हैं।।
राहु अरिष्ट ग्रह शांत करो प्रभु, हमने तुम्हें पुकारा है।
हमको प्रभु भव से पार करो, तुम बिन न कोई हमारा है।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

विषयों के विष की प्याला को, पीकर के जन्म गँवाया है।
नहिं जन्म मरण के दुःखों से, हमको छुटकारा मिल पाया है।।
हम मिथ्या मल धोने प्रभुजी, शुभ कलश में जल भर लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादि कषायों के कारण, संताप हृदय में छाया है।
मन शांत रहे मेरा भगवन, यह भक्त चरण में आया है।।
संसार ताप के नाश हेतु, हम शीतल चंदन लाए हैं।
राहू अरिष्ट ग्रह शांति हेतु प्रभु, चरणों में शीश झुकाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर वैभव जान प्रभू, तुमने सब राग नशाया है।

स्वाहा।

सहस्र आम्रवन बीच, श्रावण शुक्ला षष्ठमी।
पशु आक्रंदन देख, तप धारे गिरनार पर।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठभ्यां तप कल्याणक मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ ज्ञान कल्याण, आश्विन शुक्ल प्रतिपदा।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान, नेमिनाथ जिन पा लिए।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।

झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके ।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए पद निर्वाण, आठें शुक्ला अषाढ़ की।
हुआ मोक्ष कल्याण, ऊर्जयन्त के शीर्ष से।।
तीन लोक के ईश, अर्घ्य चढ़ाते भाव से।
झुका रहे हम शीश, चरण कमल में आपके ।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

समुद्र विजय माँ शिवा देवी के, नेमिराज सुत कहे महान।
शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, ऊर्जयन्त से है निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ड़ेढ़ योजन का समवशरण प्रभु, नेमिनाथ का रहा महान।
श्याम वर्ण है प्रभु के तन का, शंख कहा जिनकी पहचान।।
दिव्य कमल शोभा पाता है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चऊ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सहस्त्र वर्ष की आयू पाए, भोगों से जो रहे विरक्त।
कही धनुष दश की ऊँचाई, सुर नर बने प्रभू के भक्त।।

ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'वरदत्तादी' ग्यारह गणधर, नेमिनाथ के साथ कहे।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, के चरणों मम माथ रहे।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं ह्रवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नम: श्री नेमिनाथस्य 'वरदत्तादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– समुद्र विजय के लाड़ले, शिवादेवी के लाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

(राधेश्याम छन्द)

सुरेन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र गणीन्द्र, शतेन्द्र सुध्यान लगाते हैं।
जिनराज की जय जयकार करें, उनका यश मंगल गाते हैं।।
जो ध्यान प्रभू का करते हैं, दुख उनके सारे हरते हैं।
जो चरण शरण में आ जाते, वह भवसागर से तरते हैं।।
तुम धर्ममई हो कर्मजई, तुममें जिनधर्म समाया है।
तुम जैसा बनने हेतु नाथ !, यह भक्त चरण में आया है।।
प्रभु द्रव्य भाव नोकर्म सभी, अरु राग द्वेष भी हारे हैं।
प्रभु तन में रहते हुए विशद, रहते उससे अति न्यारे हैं।।
जिसको भव सुख की चाह नहीं, वह दुख से क्या भय खाते हैं।

वह महाबली जिन धीर वीर, भवसागर से तिर जाते हैं।।
जो दयावान करुणाधारी, वात्सल्यमयी गुणसागर हैं।
वह सर्वसिद्धियों के नायक, शुभ रत्नों के रत्नाकर हैं।।
शुभ नित्य निरंजन शिव स्वरूप, चैतन्य रूप तुमने पाया।
उस मंगलमय पावन पवित्र, पद पाने को मन ललचाया।।
कर्मों के कारण जीव सभी, भव सागर में गोते खाते ।
जो शरण आपकी आते हैं, वह उनके पास नहीं आते ।।
तुम हो त्रिकालदर्शी प्रभुवर, तुमने तीर्थंकर पद पाया है।
तुमने सर्वज्ञता को पाया, अरु केवलज्ञान जगाया है।।
तुम हो महान अतिशय धारी, तुम विधि के स्वयं विधाता हो।
सुर नर नरेन्द्र की बात कहाँ, तुम तो जन-जन के त्राता हो।।
तुम हो अनन्त ज्ञाता दृष्टा, चिन्मूरत हो प्रभु अविकारी।
जो शरण आपकी आ जाए, वह बने स्वयं मंगलकारी।।
जो मोह महामद मदन काम, इत्यादि तुमसे हारे हैं।
जो रहे असाता के कारण, चरणों झुक जाते सारे हैं।।
ज्यों तरुवर के नीचे आने से, राही शीतल छाया पाता।
प्रभु के शरणागत आने से, स्वमेव आनन्द समा जाता।।
तुमने पशुओं का आक्रन्दन, लख कर संसार असार कहा।
यह तो अनादि से है असार, इसका ऐसा स्वरूप रहा।।
हे जगत पिता ! करुणा निधान, यह सब तो एक बहाना था।
शायद कुछ इसी बहाने से, राजुल को पार लगाना था।।
राजुल का तुमने साथ दिया, उससे नव भव की प्रीति रही।
पर हमसे प्रीति निभाई न, वह खता तो हमसे कहो सही।।

अब शरण खड़ा है शरणागत, इसका भी बेड़ा पार करो।
कर रहा भक्ति के वशीभूत, हे ! दयासिंधु स्वीकार करो।।
जो शरण आपकी आ जाए, वह भव में कैसे भटकेगा।
जो भक्ति भाव से गुण गाए, वह जग में कैसे अटकेगा।।
तुम तीर्थंकर बाइसवें प्रभु, तुम बाईस परीषह को जीते।
तुमने अनन्त बल सुख पाया, तुम निजानन्द रस को पीते।।
जैसे प्रभु भव से पार हुए, वैसे मुझको भी पार करो।
हमको आलम्बन दे करके, प्रभु इस जग से उद्धार करो।
जो भाव सहित पूजा करते, वह पूजा का फल पाते हैं।।
पूजा के फल से भक्तों के, सारे संकट कट जाते हैं।
हम जन्म-जरा-मृत्यु के संकट से,घबड़ाकर चरणों आये हैं।
अब उभय रूप प्रभु मोक्ष महापद, पाने को शीश झुकाये हैं।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय नेमि जिनेशं, हितउपदेशं, शुद्ध बुद्ध चिद्रूपयति।
जय परमानन्दं, आनन्दकंदं, दयानिकंदं ब्रह्मपति।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- नेमिनाथ के द्वार पर, पूरी होती आश।
मुक्ती हो संसार से, पूरा है विश्वास।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा-23
(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।

अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभू की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(त्रिभगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ ।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।। 4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अश्वसेन वामा देवी के, सुत का पार्श्वनाथ है नाम।
प्रभू बनारस नगरी जन्में, तीर्थराज है मुक्ती धाम।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभू कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण शुभ एक योजन का, पार्श्वनाथ का रहा महान।
हरित वर्ण में शोभा पाते, नाग चिन्ह प्रभु की पहचान।।
दिव्य कमल शोभा पाता हैं, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयु मात्र सौ वर्ष प्रभु की, कठिन साधना किए जिनेश।
ऊँचाई नौ हाथ कही है, श्री जिनेन्द्र की यहाँ विशेष।।
ॐकारमय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गणधर श्रेष्ठ 'स्वयंभू आदिक, पार्श्वनाथ के दश जानो।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धिधारी, मुनियों को भी पहिचानो।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।9।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः
श्री पार्श्वनाथस्य 'स्वयंभ्वादि' दश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ।।1 ।।

(छन्द तामरस)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।

जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ति पाने के लिए, करते चरण प्रणाम्।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

श्री महावीर स्वामी जिनपूजा–24

(स्थापना)

हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हमको सद्राह दिखा जाओ।
यह भक्त खड़ा है आश लिये, प्रभु आशिष दो उर में आओ।।
तुम तीन लोक में पूज्य हुए, हम पूजा करने को आए।
हम भक्ति भाव से हे भगवन्!,यह भाव सुमन कर में लाए।।
हे नाथ! आपके द्वारे पर, हम आये हैं विश्वास लिए।
आह्वानन् करते हैं उर में, यह भक्त खड़े अरदास लिए।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

क्षण भंगुर यह जग जीवन है, तृष्णा जग में भटकाती है।
स्वाधीन सुखों से दूर करे, निज आत्म ज्ञान बिसराती है।।
मैं प्रासुक जल लेकर आया, प्रभु जन्म मरण का नाश करो हे महावीर।
स्वामी! करु णाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केशर की गंध महा, मानस मधुकर महकाती है।
आतम उससे निर्लिप्त रही, शुभ गंध नहीं मिल पाती है।।
शुभ गंध समर्पित करते हैं, आतम में गंध सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करु णाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा।

हमने जो दौलत पाई है, क्षण-क्षण क्षय होती जाती है।
अक्षय निधि जो तुमने पाई, प्रभु उसकी याद सताती है।।
मैं अक्षय अक्षत लाया हूँ, अब मेरा न उपहास करा।
हे महावीर स्वामी! करु णाकर ,सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हे प्रभो! आपके तन से शुभ, फूलों सम खुशबू आती है।
सारे पुष्पों की खुशबू भी, उसके आगे शर्माती है ।।
मैं पुष्प मनोहर लाया हूँ, मम् उर में धर्म सुवास भरो।
हे महावीर स्वामी! करु णाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्व. स्वाहा।

भर जाता पेट है भोजन से, रसना की आश न भरती है।
जितना देते हैं मधुर मधुर, उतनी ही आश उभरती है।।
नैवेद्य बनाकर लाये हम, न मुझको प्रभू निराश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मैं सोच रहा सूरज चंदा, दीपक से रोशनी आती है।
हे प्रभो! आपकी कीर्ति से, वह भी फीकी पड़ जाती है।।
मैं दीप जलाकर लाया हूँ, मम् अन्तर में विश्वास भरो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जीवों को सदियों से भगवन्, कर्मों की धूप सताती है।
कर्मों के बन्धन पड़ने से, न छाया हमको मिल पाती है।।
यह धूप चढ़ाता हूँ चरणों, मम् हृदय प्रभू जी वास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, न तृप्ति हमें मिल पाती है।
यह फल तो सारे निष्फल हैं, माँ जिनवाणी यह गाती है।।
इस फल के बदले मोक्ष सुफल, दो हमको नहीं उदास करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

हम राग द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है।

जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है।।
हम अर्घ्य बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो।
हे महावीर स्वामी! करुणाकर, सद्दर्शन ज्ञान प्रकाश भरो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

आषाढ़ शुक्ल की षष्ठी आई, देव रत्नवृष्टि करवाई।
देव सभी मन में हर्षाए, गर्भ में वीर प्रभु जब आए।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत शुक्ल की तेरस आई, सारे जग में खुशियाँ छाई।
प्रभु का जन्म हुआ अतिपावन, सारे जग में जो मन भावन।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मार्ग शीर्ष दशमी दिन आया, मन में तब वैराग्य समाया।
सारे जग का झंझट छोड़ा, प्रभु ने जग से मुँह को मोड़ा।।

ॐ ह्रीं मंगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वैशाख शुक्ल दशमी शुभ आई, पावन मंगल मय अति भाई
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाय समवशरण बनवाया।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कार्तिक की शुभ आई अमावस, प्रभु ने कर्म नाश कीन्हे बस।

हम सब भक्त शरण में आये, मुक्ति गमन के भाव बनाए।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्या मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

माँ त्रिशला नृप सिद्धारथ सुत, वर्धमान जी कहलाए।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, पावापुर मुक्ती पाए।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज में विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर का समवशरण प्रभु, योजन मात्र बनाए देव।
तप्त स्वर्ण वत् आभा पाए, शेर चिन्ह पाए प्रभु एव।।
दिव्य कमल शोभा पाते है, गंध कुटी पर श्रेष्ठ महान।
अधर विराजे सिंहासन पर, दर्शन दें चउ दिश भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कही बहत्तर वर्ष की आयु, पंच प्रभु ने पाए नाम।
सात हाथ तन ऊँचाई, प्रभु पद बारम्बार प्रणाम्।।
ॐकार मय दिव्य ध्वनि है, प्रभु की जग में मंगलकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्य: जलादि अर्घ्यं निर्व.

स्वाहा।

'इन्द्रभूति' आदि गणधर थे, ग्यारह महावीर के साथ।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, के पद झुका रहे हम माथ।।
दुखहर्त्ता सुखकर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।4।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री महावीरनाथस्य 'इन्द्रभूत्यादि' एकादश गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीन लोक के नाथ को, वन्दन करूँ त्रिकाल।
महावीर भगवान की, गाता हूँ जयमाल।।

(आर्या छन्द)

हे वर्धमान! शासन नायक, तुम वर्तमान के कहलाए।
हे परम पिता! हे परमेश्वर! तव चरणों में हम सिर नाए।।

छंद ताटंक

नृप सिद्धारथ के गृह तुमने, कुण्डलपुर में जन्म लिया।
माता त्रिशला की कुक्षि को, आकर प्रभु ने धन्य किया।।
शत् इन्द्रों ने जन्मोत्सव पर, मंगल उत्सव महत किया।
पाण्डुक शिला पर ले जाकर के, बालक का अभिषेक किया।।
दायें पग में सिंह चिन्ह लख, वर्धमान शुभ नाम दिया।
सुर नर इन्द्रों ने मिलकर तब, प्रभु का जय जयकार किया।।

नन्हा बालक झूल रहा था, पलने में जब भाव विभोर।
चारण ऋद्धि धारी मुनिवर, आये कुण्डलपुर की ओर।।
मुनिवर का लखकर बालक को, समाधान जब हुआ विशेष।
सन्मति नाम दिया मुनिवर ने, जग को दिया शुभम् सन्देश।।
समय बीतने पर बालक ने, श्रेष्ठ वीरता दिखलाई।
वीर नाम की देव ने पावन, ध्वनि लोक में गुंजाई।।
कुछ वर्षों के बाद प्रभु ने, युवा अवस्था को पाया।
कुण्डलपुर नगरी में इक दिन, हाथी मद से बौराया।।
हाथी के मद को तब प्रभु ने, मार-मार चकचूर किया।
अति वीर प्रभु का लोगों ने, मिलकर के शुभ नाम दिया।।
तीस वर्ष की उम्र प्राप्त कर, राज्य छोड़ वैराग्य लिए।
मुनि बनकर के पञ्च मुष्टि से, केश लुंच निज हाथ किए।।
परम दिगम्बर मुद्रा धरकर, खड्गासन से ध्यान किया।
कामदेव ने ध्यान भंग कर, देने का संकल्प लिया।।
कई देवियाँ वहाँ बुलाई, उनने कुत्सित नृत्य किया।
हार मानकर सभी देवियों ने, प्रभु पद में ढोक दिया।।
काम-देव ने महावीर के, नाम से बोला जयकारा।
मैंने सारे जग को जीता, पर इनसे में भी हारा।।
बारह वर्ष साधना करके, केवल ज्ञान प्रभु पाए।
देव देवियाँ सब मिल करके, भक्ति करने को आए।।
धन कुबेर ने विपुलाचल पर, समोशरण शुभ बनवाया।

छियासठ दिन तक दिव्य देशना, का अवसर न मिल पाया।।
श्रावण वदी तिथि एकम को, दिव्य ध्वनि का लाभ मिला।
शासन वीर प्रभु का पाकर, ''विशद'' धर्म का फूल खिला।।
कार्तिक वदी अमावस को प्रभु, पावन पद निर्वाण हुआ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो सभी जन, सबका मार्ग प्रशस्त किया।।

दोहा- महावीर भगवान ने, दिया दिव्य संदेश।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ो तुम, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मबन्धन विमुक्त विघ्न विनाशक श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- कर्म नाश शिवपुर गये, महावीर शिव धाम।
शिव सुख हमको प्राप्त हो, करता चरण प्रणाम।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जाप – **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरभ्यो नमः।**
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचकल्याणक समन्वित वृषभादिवीरान्तेभ्यो नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा – प्रभू भक्त हम आपके, भक्ती करें त्रिकाल।
चौबीसों जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

चाल–टप्पा

कर्म घातिया नाश किए तब, हुए ज्ञानधारी।
मोक्षमार्ग पर बढ़ने वाले, जग–जन उपकारी।।

जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
आदिनाथ हैं आदि जिनेश्वर, जिन गुण के धारी।
अजितनाथ हैं नाथ लोक में, अति विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
संभव जिन की भक्ती भाई, जग में हितकारी।
अभिनंदन का वंदन होता, जग मंगलकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
सुमतिनाथ की दिव्य देशना, अतिशय सुखकारी।
पद्मप्रभु जी रहें लोक में, बनकर अविकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
जिन सुपार्श्वजी पार्श्वमणि सम, हैं गुण के धारी।
चन्द्रप्रभु जी पूर्ण चाँदनी, सम शीतल धारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
पुष्पदंत ने कर्म अंत की, कीन्ही तैय्यारी।
शीतलनाथ जिनेश्वर की तो, महिमा है न्यारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।

श्रेयनाथ जी श्रेय प्रदाता, हैं करुणाकारी।
वासुपूज्य जग पूज्य हुए हैं, ऋषिवर अनगारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
विमलनाथ जी मुक्ती हमको, मिल जाए प्यारी।
श्री अनंत जिन हैं इस जग में, गुण अनंतधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
धर्मनाथ जिनराज कहे हैं, विशद धर्मधारी।
शांतिनाथ जी हैं इस जग में, परम शांतिकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
कुंथुनाथ जिन हुए लोक में, त्रयपद के धारी।
अरहनाथ भी रहे जहाँ में, अति महिमाधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
मल्लिनाथ कर्मों के नाशी, अतिशय अविकारी।
मुनिसुव्रतजी व्रत धारण कर, हुए ज्ञानधारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
नमिनाथ की पूजा करते, सारे नर-नारी।
नेमिनाथ वैराग्य धारकर, पहुँचे गिरनारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।

वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।
पार्श्वनाथ ने कठिन परीषह, सहन किए भारी।
महावीर की महिमा जग में, है विस्मयकारी।।
जिनेश्वर हैं अतिशयकारी।
वर्तमान चौबीस जिनेश्वर, हैं मंगलकारी।।

(छन्द – घत्तानन्द)

जय–जय जिन स्वामी, अन्तर्यामी, मोक्षमार्ग के पथगामी।
जय शिवपुरगामी, त्रिभुवननामी, सिद्ध शिला के हो स्वामी।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकाल सम्बन्धी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा – चौबीसों जिनराज को, वंदन बारम्बार।
तीर्थंकर पद प्राप्त कर, पाऊँ भवदधि पार।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अर्हंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।।1।।

अर्हन्त–भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दया–मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।

त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नंदीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजत भजूँ।।4।।

कैलाश श्री सम्मेद श्री, गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसुजयि, होय पति शिव गेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यपूजा, भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करै करावै भावना भावै श्री अरहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी, पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन-विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक, मध्य लोक, पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पद्मपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर मालपुरा आदिनाथ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे ..... देश..... प्रान्ते..... नाम्नि नगरे..... मासानामुत्तमे ..... मासे शुभ पक्षे ..... तिथौ ..... वासरे ..... मुनि आर्यिकानां श्रावक-श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ (भाषा)

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्प क्षेपण करते रहना चाहिये)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एकसो आठ विराजे, निरखत नयन कमलदललाजै।।1।।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमो शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजों शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघको।।4।।

बसंत तिलका

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहि शांति सदा अनूप।।5।।

इन्द्रवज्रा

संपूजकों को प्रतिपालकों को,
यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा-प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,

कीजे सुखी हे जिन ! शांति को दे ।।6 ।।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुखबल युत धर्मधारी नरेशा ।
होवे वर्षा समे पे तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा ।।
होवे चोरी न जारी सुसमय वरते हो न दुष्काल भारी ।
सारे ही देश धारै जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ।।7 ।।

दोहा – **घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज ।**
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ।।8 ।।

अथेष्टक प्रार्थना

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का ।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढांकु सभी का ।।
बोलूँ प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं ।
तोलों सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जौलों न पाऊं ।।1 ।।

आर्या छन्द

तब पद मेरे हियमें, मम् हिय तेरे पुनीत चरणों में ।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने ।।10 ।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे ।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से ।।11 ।।
हे जगबन्धु ! जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी ।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों का, क्षय हो सुबोध सुखकारी ।।12 ।।

(परिपुष्पांजलि क्षिपेत्) यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिए ।

इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा, इति शान्त्ये शांतिधारा

चौपाई

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करों मनलाय।
जनम जनम प्रभु पाऊं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि।।
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय।
बार बार मैं विनती करूं, तुम सेवा भवसागर तरुं।।
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव।।
जिनपूजा तैं सब सुख होय, जिनपूजा सम और न कोय।
जिनपूजा तैं स्वर्ग विमान, अनुक्रमतैं पावे निर्वाण।।
मैं आयो पूजन के काज, मेरे जन्म सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊं शीश, मुझ अपराध क्षमहु जगदीश।।

दोहा – सुख देना दुःख मेटना, यही आपकी बान।
मो गरीब की विनती, सुन लिज्यो भगवान।।

पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावे मोक्ष निदान।।
जैसी महिमा तुम विषें, और धरे नहिं कोय।
जो सूरज में ज्योति है, नहिं तारगण होय।।
नाथ तिहारे नामते, अघ छिनमांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाशतें, अन्धकार विनशाय।।
बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत अज्ञान।
पूजाविधि जानूं नहीं, शरण राखो भगवान।।
इस अपार संसार में, शरण नाहिं प्रभु कोय।
यातैं तव पद भक्तको, भक्ति सहाई होय।।

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोई।
तुम प्रसाद ते परमगुरु, सो सब पूरण होय।।1।।

पूजनविधि जानूँ नहीं, नहीं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान।।2।।

मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।

आये जो-जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते सब मेरे मन बसो, चौबीसों भगवान।।4।।

इत्याशीर्वादः।

आशिका लेना

श्रीजिनवर की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव-भवके पातक कटे, दुःख दूर हो जाय।।1।।

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज - मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।।टेक।।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए।
विशद आरती ...
पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।

विशद आरती ...
श्रेय नाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु कहलाए, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए।
विशद आरती ...
शांति कन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोहे मल्ल को, क्षण में मार भगाए।
विशद आरती ...
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए।
विशद आरती ...

24 तीर्थंकर विधान की प्रशस्ति

मध्यलोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
होती जम्बू वृक्ष से, जिनकी शुभ पहचान।।1।।
भरत क्षेत्र में एक है, उत्तम भारत देश।
प्रांत एक जिसमें रहा, राजस्थान विशेष।।2।।
राजधानी उसकी रही, जयपुर है शुभ नाम।
टोंक जिला में जानिए, उनियारा शुभ ग्राम।।3।।
नगर बीच मंदिर शुभम्, किया गया निर्माण।
मूल नायक जिसमें रहे, पद्म प्रभु भगवान।।4।।
काल उत्सर्पिणी में सदा, चौबीस हुए जिनेश।
और अवसर्पिणी में विशद, होते हैं तीर्थेश।।5।।
काल अनादि क्रम यही, चलता रहा त्रिकाल।
तीर्थंकर पद लोक में, पूज्य रहा हर काल।।6।।

तीर्थंकर चौबीस का, किया गया गुणगान।
जिससे यह अतिशय बना, सुन्दर श्रेष्ठ विधान।।7।।
इनकी अर्चा के लिए, लिक्खा श्रेष्ठ विधान।
भाव सहित अर्चा करो, जग के सब धीमान।।8।।
मिलकर सर्व समाज ने, निर्णय लिया विशेष।
पास हमारे आनकर, सुना दिए संदेश।।9।।
माघ शुक्ल वैसाख की, आठें रही महान।
उससे तेरस तिथि तक, होय पञ्चकल्याण।।10।।
पच्चीस सौ पैंतीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
विक्रम सम्वत् बीस सौ, पैसठ कहा महान।।11।।
पौष शुक्ल की पूर्णिमा, रविवार की शाम।
रचना पूरी कर किया, इससे पूर्ण विराम।।12।।
लघु धी लघुता से विशद, रचना हुई महान।
जिन गुरु के आशीष से, किया गया गुणगान।।13।।
बुद्ध जन पढ़कर के करें, इसका पूर्ण सुधार।
जिनवाणी का श्रेष्ठ यह, धारें कण्ठाहार।।14।।

आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

पुण्य उदय से हे!गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जातेहैं।।
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं।।
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं।।
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं।।
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं।।
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं।।
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं।।
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैं।।
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं।।
ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल।।

(ताटंक छन्द)

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण।।
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी।।
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े।।
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया।।
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ,दो हजार सन्पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, गुरु बने आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते।।
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।

तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है।।
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है।।
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना।।
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता।।
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में,मन-वच-तन अनुराग करें।।
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें।।

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान।।

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।

नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर